7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 सीएम योगी ने दी स्वीकृति

5 गोरखपुर में हादसा

8 'रोहित-विराट का भविष्य अनिश्चित

UPHIN/2023/90814 | वर्ष: 03, अंक: 08 | पृष्ठ संख्या: 8 | मूल्य: 1.00 रू. | सोमवार 18 अगस्त,2025

स्वतंत्रता दिवस पर विधान भवन प्रांगण में मुख्यमंत्री योगी ध्वजारोहण किया

स्वतंत्रता दिवस पर विधान भवन प्रांगण में ध्वजारोहण के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की घोषणा

मुख्यमंत्री ने कहा कि संविधान निर्माता डा. आंबेडकर के जन्मदिवस पर सरकार विद्यार्थियों के लिए विशेष स्कॉलरशिप योजना शुरू करेगी। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश भारत का ग्रोथ इंजन बनकर उभरा है। लखनऊ में बनी मिसाइल ने दुश्मन के अड्डों को तहस–नहस कर दिया।

संवाददाता, लखनऊ । मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वतंत्रता दिवस पर विधानभवन पर ध्वजारोहण करने के बाद प्रदेश के सभी लोगों को आजादी के 79वें पर्व पर बधाई दी। इसके साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों के लिए विशेष स्कॉलरशिप योजना शुरू करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने साथ ही हर सेक्टर में महिलाओं को संख्या पचास प्रतिशत तक पहुंचाने का लक्ष्य तय किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि संविधान निर्माता डा. आंबेडकर के जन्मदिवस पर सरकार विशेष स्कॉलरशिप योजना शुरू करेगी। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश भारत का ग्रोथ इंजन बनकर उभरा है।

अवंतीबाई लोधी जयंती: सीएम योगी ने पुष्पार्पित कर किया याद

वीरांगना अवंतीबाई लोधी की जयंती पर सीएम योगी ने उनकी प्रतिमा पर पुष्पार्पित कर उन्हें याद किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि महान वीरांगना ने मातृभूमि के लिए अपना बलिदान दिया। सरकार ने यूपी में उनके नाम पर पीएसी बटालियन की स्थापना की।

लखनऊ,संवाददाता। राजधानी लखनऊ समेत प्रदेशभर में शनिवार को स्वाधीनता संग्राम सेनानी, महान वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी की 195वीं जयंती मनाई जा रही है। इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उनकी प्रतिमा पर पुष्पार्पित कर उन्हें याद किया। साथ ही अनेक योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी साझा की। इस अवसर पर सीएम योगी ने कहा कि वीरांगना अवंती बाई लोधी ने भारत की स्वाधीनता के लिए तानाशाही पूर्ण शासन के खिलाफ बड़ा संघर्ष किया। उन्होंने मातृभूमि के लिए अपना बलिदान दिया। उनका यह अदम्य साहस और बलिदान हर भारतवासी के लिए प्रेरणा है। बदायूं में उनके नाम पर पीएसी की एक नई बटालियन की स्थापना की गई है।

भारत माता की जय

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर पीएम मोदी ने पूरे भारतवासियों को दी बधाई

लाल किले से पीएम मोदी ने किया बड़ा एलान

लाल किले से स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर अपने भाषण में पीएम नरेन्द्र मोदी ने गहरे समुद्र के भीतर तेल व गैस के भंडार खोजने के काम को मिशन मोड पर शुरू करने की घोषणा की है। हमें इस संकट से देश को आत्मनिर्भर बनाना ऊर्जा में आत्मनिर्भर बनाना बहुत जरूरी है। 11 वर्ष में सोलर एनर्जी 30 गुणा बढ़ी है।

नई दिल्ली,एजेंसी। पिछले दो दशकों के दौरान घरेलू क्षेत्र में तेल व गैस के भंडार खोजने के लिए अभियान का बहुत ही उत्साहजनक परिणाम नहीं दिखा है। भारत अपनी कुल तेल खपत का 87 फीसद आयात करता है।

समुद्र के भीतर तेल व गैस के भंडार खोजने घोषणा

ऐसे में शुक्रवार को लाल किले से स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर अपने भाषण में पीएम नरेन्द्र मोदी ने गहरे समुद्र के भीतर तेल व गैस के भंडार खोजने के काम को मिशन मोड पर शुरू करने की घोषणा की है। हाल के समय में पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने अंडमान निकोबार क्षेत्र में बड़े हाइड्रोकार्बन भंडार मिलने के संकेत दिए हैं, इसको देखते हुए पीएम मोदी की घोषणा काफी अहम माना जा रहा है। अभी भारत अपनी जरूरत के लिए रूस से काफी तेल खरीद रहा है जिसकी वजह से अमेरिका से रिश्ते खराब हो रहे हैं। तेल व गैस उत्पादन में आत्मनिर्भर बनने की कोशिश को इससे भी जोड़ कर देखा जा रहा है।

यही वजह है कि पीएम मोदी ने अपने भाषण में दो बार इस बात का जिक्र किया कि विदेशों से ऊर्जा आयात करने पर देश को कितनी ज्यादा राशि खर्च करनी पड़ रही है और इसका समाधान तभी होगा जब देश ऊर्जा सुरक्षा में आत्मनिर्भर होगा।

'मिशन मोड में शुरू होगा समुद्र के भीतर से तेल निकालने का काम

अलास्का में पुतिन के तेवर दिखे नरम, लेकिन समझौते पर नहीं बनी सहमति

दिल्ली,एजेंसी। ट्रंप और पुतिन के बीच एल्मेडॉर्फ–रिचर्डसन सैन्य बेस पर हुई बैठक में कोई अंतिम सहमति नहीं बन पाई। हालांकि पुतिन ने बैठक के बाद प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि वे एक 'समझ' पर पहुंच गए हैं भले ही समझौता नहीं हुआ। वहीं ट्रंप ने कहा कि हमारी बैठक बेहद फलदायी रही और कई बिंदुओं पर सहमति बनी। अब बहुत कम बिंदु बचे हैं। कुछ उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं। एक मुद्दा शायद सबसे महत्वपूर्ण है, लेकिन हमें उस तक पहुंचने की बहुत अच्छी संभावना दिख रही है। रूस और यूक्रेन के बीच तीन साल से भी ज्यादा समय से जंग जारी है। इस जंग को रुकवाने के लिए रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच अलास्का के एल्मेडॉर्फ–रिचर्डसन सैन्य बेस पर बैठक हुई। बंद कमरे में हो रही इस बैठक में ट्रंप के साथ मार्को रूबियो और विटकॉफ के साथ कुछ अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे। वहीं रूसी पक्ष में पुतिन के साथ सर्गेई लावरोव और वित्त मंत्री एंटोन सिलुआनोव और आर्थिक सलाहकार किरिल दिमित्रिएव भी मौजूद थे। हालांकि बैठक में दोनों पक्षों में कोई अंतिम सहमति नहीं बन पाई। बैठक के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन प्रेस वार्ता के लिए पहुंचे। यह बैठक रूस–यूक्रेन युद्ध पर केंद्रित थी। बता दें कि दोनों नेताओं के बीच 2019 के बाद यह दोनों की पहली आमने–सामने की बैठक है।

दोनों नेताओं ने की साझा प्रेस कांफ्रेंस

प्रेस कांफ्रेंस के दौरान रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि यूक्रेन की स्थिति हमारी सुरक्षा के लिए एक बुनियादी खतरा है। साथ ही, हम इस बात से आश्वस्त हैं कि समझौते को स्थायी और दीर्घकालिक बनाने के लिए, हमें संघर्ष के सभी प्राथमिक कारणों को समाप्त करना होगा। मैं राष्ट्रपति ट्रम्प से सहमत हूं, जैसा कि उन्होंने आज कहा है, कि स्वाभाविक रूप से, यूक्रेन की सुरक्षा भी सुनिश्चित की जानी चाहिए। हम इसका स्वागत करने के लिए तैयार हैं। मैं आशा करता हूं कि हम जिस समझौते पर पहुंचे हैं, उससे हमें उस लक्ष्य के करीब पहुंचने में मदद मिलेगी और यूक्रेन में शांति का मार्ग प्रशस्त होगा। हम उम्मीद करते हैं कि कीव और यूरोपीय राजधानियां इसे सकारात्मक रूप से समझेंगी और काम में कोई बाधा नहीं डालेंगी। वे प्रगति को बाधित करने के लिए किसी गुप्त सौदेबाजी का इस्तेमाल करके उकसावे की कार्रवाई करने की कोशिश नहीं करेंगी।

सम्पादकीय

कितने जंगल, कितने लोग

हिमाचल को अकसर नसीहतों ने विवश कर दिया, वरना रास्ते तो यहां भी मंजिल तक थे। हम एक आपदा को बारूद की बारिश मानें ये हमारी मजबूरी, लेकिन सच यह भी है कि हमने आदतें नहीं बदलीं। अदालतें कहें, पर्यावरणविद बनें या पहाड़ को आपदा की दहशत से जोड़ें, हमारे फर्ज केवल सरकार से उसके कदमों की निशानी पूछते हैं, जबकि समूची जनता ने अपने स्वार्थी आचरण या जीवनशैली की बदलती अनिवार्यता को निरंकुश बना लिया। हमारे आचरण में शहरीकरण आ चुका है, लेकिन हिमाचल खुद को ग्रामीण जनता के हक में देखता है। हम वास्तविक शहरीकरण को ठुकराते हुए नदी–नालों के करीब पहुंच गए, हमने सोलन के पहाड़ खरीद लिए, मकलोडगंज और मनाली की हरियाली को छिन्न–भिन्न कर दिया और सत्ता एवं राजनीति के घालमेल में टीसीपी की आत्मा को कुचल दिया। हमने और हमारे जन प्रतिनिधियों ने शहरी योजनाओं को दफन करते हुए 'ग्रीन बेल्ट' को आजाद करके बर्बाद किया। टीसीपी ने धर्मशाला की विकास योजना में 'गमरू क्षेत्र' को ग्रीन बेल्ट मान कर प्रतिबंध लगाए, लेकिन सियासत के सदके आज वहां तंग गलियों के बीच घिनौना निर्माण, पूरी तरह विनाश का सूत्रधार बना हुआ है। बीड़–बिलिंग को पर्यटन से आती संपन्नता तो मंजूर है, लेकिन नगर निकाय के तहत व्यवस्थित विकास मंजूर नहीं। हमने सडक़ें संकरी कर दीं ताकि हमारे वोट के आश्वासन से एमएलए साहब डरे रहें और ये जनप्रतिनिधि कर क्या रहे। बस एक यही गणित है कि कहीं इलाके के कर्मचारी घर–परिवार नाराज न हो जाएं। लोगों का चूल्हा तो जले, लेकिन चूल्हा कर न लगे। आश्चर्य यह कि एडीबी की मदद से सियासत के मदरसे खुल गए। अधूरे भवनों की नुमाइश में कल अगर बारिश शैतान हुई तो फिर प्रायश्चित कौन करेगा। हम सराज की त्रासदी में गमगीन हो कर भी यह विचार नहीं कर रहे कि वहां के विकास में कुछ गलतियां रहीं या हमने सामुदायिक भावना को तिलांजलि देकर, घर से घर की दीवार को लड़ा दिया। हम न्यू शिमला को राजधानी के विस्तार की व्याख्या में देखें, तो वहां लड़ती हुई दीवारें, टीसीपी कानून की धज्जियां, भविष्य की अनदेखी और शिमला को लांछित करती तस्वीर ही तो बना पाए। हमारी राजनीति में न तो बौद्धिक कौशल है और न ही बुद्धिजीवियों में प्रदेश के प्रति सरोकार दिखाई देते। सत्तर के दशक से ही सरकारी नौकरी ने भवन निर्माण का हुनर सिखाया कि कर्मचारी से अधिकारी तक सीमेंट–सरिया से खेलते–खेलते भूल गए कि हम न गांव के रहे और न ही शहर के बने। यह दीगर है कि अब हिमाचल में 74 शहरी निकाय हो गए और शिखर पर आठ नगर निगम भी दिखाई दे रहे हैं, लेकिन नक्शे पर न नगर पंचायत, परिषद और न ही नगर निगम मुकम्मल हुए। आखिर नगर निगम के संचालन को जितनी जमीन चाहिए, क्या उतना लैंड बैंक हम बना पाए। शहरी विकास योजना के मजमून में हम अभी तक न सुविधाएं, न सुकून और न ही भविष्य का परिदृश्य बना पाए। अब एक जंगल तो पर्यावरण का ढोंगी बाबा और वन विभाग की कसरतों का खामियाजा है और दूसरा हिमाचल का विकास नहीं, मानव प्रदर्शन का रिवाज है। क्या हमने गांव या शहर की व्याख्या में जल, जमीन और जंगल को जोड़ा। क्या हमने शहरी विकास योजना के तहत यह प्लानिंग की कि अगले पचास सालों में हमें अपने लैंड बैंक के हिस्से में कितना जंगल चाहिए। क्या चीड़ के जलते जंगलों से शहर को निजात दिलाने के लिए कभी वन विभाग के साथ समन्वय कायम हुआ। हमीरपुर को नगर निगम बनाने की परिपाटी में कितना जंगल चाहिए और कितनी वन भूमि वापस चाहिए। शहर को सार्वजनिक मैदानों की जरूरत पूरी करनी है, तो उसके लिए अर्जियां कब तक घूमती रहेंगी। राजस्व की दृष्टि से भूमि के छोटे–छोटे टुकड़ों, सार्वजनिक तथा वनभूमि के बीच पूलिंग की जरूरत है। आपदा के बाद सराज पुनर्वास योजना को एक विस्तृत शहरी एवं ग्रामीण विकास योजना के तहत ही संबल मिलेगा। सराज आपदा को टीसीपी, ग्रामीण एवं शहरी विकास, कृषि एवं बागबानी, पर्यावरण एवं वन तथा समस्त विभागों की देखरेख में ऐसे विकास को चुनना होगा, जो हिमाचल के लिए एक मॉडल बना सके।

इन दो महीनों के लिए

बरसात के ये महीने कैसे गुजारें, दरकते लम्हों से खुद को कैसे निकालें। खबरों की खबर यह है कि हिमाचल के हर रास्ते पर कहर है और विकास की हर मेहनत पर सुराख है। आपदा के नुकसान को चेहरे पर ओढ़े ये दो–ढाई महीने, अपने कठघरों में सजा देते हैं। यहां फेल क्या हो रहा है और उस विकास का क्या हो रहा जो हर सत्ता को मिशन रिपीट के चश्मे से देखता है। सूचियों में दो महीनों ने कई सरकारी आश्रय कंगाल कर दिए। असुरक्षित भवनों की श्रृंखला में कितने स्कूल, पंचायत घर और इमारतों के कबूतरखाने दिखाई दे रहे हैं। क्या आपदा के इन महीनों से सीखकर नीतियां अपने कान पकड़ेंगी। क्या नसीहतों में यह प्रदेश पर्यावरण सुरक्षा का मुजरिम बनता रहेगा या आने वाले खतरों के संदेश हमारी कसौटियां बदल देंगे। पहाड़ में साल के समय का व्यय हम कैसे करते हैं, यह सोचना पड़ेगा। विकास के लिए कितने महीने मिलते हैं और विकराल मौसम के कितने दिन कारावास में गुजरते हैं। ऐसे में क्या सरकारी मशीनरी को एक जैसी सुविधा साल भर मिल सकती है। हमने प्रदेश के कई बंटवारे कर लिए और इनमें सबसे ऊपर है सियासी आबंटन। यही सियासी आबंटन बजट और योजनाओं के करिश्मे में अपनी मिट्टी–अपनी जमीन खोजता रहता है। नई शब्दावली की ईदगाहें बनाई जाती हैं और नई रोशनी में विकास के दीप जलाए जाते हैं। जलशक्ति विभाग के उच्चतम मानदंड भी देखें तो जिस प्रदेश में पानी खूब बरस रहा है, वहां राजधानी समेत कई शहर प्यासे हैं। यह इसलिए क्योंकि जलशक्ति ने अपने कार्य को बारह महीनों में एक जैसा देखा, जबकि दो–ढाई महीनों की रंजिश में विकास के हर पैमाने को बदलना होगा। होना तो यह चाहिए कि हमारी योजनाओं का मंथन बरसात की फकीरी के साथ हो। हमारे कमोबेश सारे विभाग बरसात के पीछे छिप कर अपनी नालायकी छुपा लेते हैं। हम वर्षों से स्कूलों में यह तय नहीं कर पा रहे कि वहां ठंड का प्रकोप ज्यादा है या बरसात का कहर खतरनाक है। स्कूल शिक्षा विभाग की असमर्थता में मौसम भी शरमा जाए, लेकिन एक ही प्रदेश की कसरतें, शिक्षा के पीरियड को मौसम से नहीं बचा पा रही है। पीडब्ल्यूडी महकमा सडक़ को बरसात से अगर नहीं बचा सकता तो हमारे विकास को केवल साल के नुकसान में पढ़ लेना चाहिए। हर साल कितना विकास जाया होता है, तो इसे बचाने को नई निगाह चाहिए। हम नुकसान का एक बड़ा आंकड़ा तो सामने ले आते हैं, लेकिन कुछ बदलाव भी तो कर सकते हैं। बरसाती महीनों का कहर अगर पर्यावरण की खामियों में ही खोजना है, तो ये बारिश और बादल हिमाचल की देन नहीं। दूसरी ओर विकास अगर हिमाचली सरकारों की देन है, तो विनाश से बचने के लिए हमने क्या किया। अब तो हर साल बरसात के दौरान बचाव कार्यों की रूपरेखा में ऐसे इंतजाम और अधोसंरचना का भी सोचना होगा, जो पूरे प्रदेश में उपलब्ध हो। आपदा प्रबंधन के प्रशासनिक नजरिए को और व्यावहारिक बनाने के लिए हर गांव से शहर तक खुले मैदानों की व्यवस्था करनी होगी। सामुदायिक मैदानों का विकास किसी भी आपदा के समय आश्रय स्थल की भूमिका के अलावा प्रदेश के भूमि बैंक का एक नजरिया हो सकता। इन दो महीनों के लिए हर विभाग की अपनी एक राहत योजना होनी चाहिए, लेकिन एक विभाग जो हमारी आपदाओं में भी प्रदेश और जनता से अलग बना रहता है, उस वन एवं पर्यावरण संरक्षण विभाग को भी तो सामने आना होगा। पर्यावरण संरक्षण की दीवारों या वन भूमि की बाड़बंदी के बीच से निकलते नए नाले, पानी के बहाव का रुख मोड़ते तथा जंगल प्रबंधन की शून्यता के दुष्परिणामों से आहत जनता के लिए उसकी राहत क्या है। हमने तो जमीन को वन भूमि बना दिया, लेकिन बरसात के जख्मों के बीच पर्यावरण की वचनबद्धता की जवाबदेही भी तो तय हो। जो विभाग जंगलों में गिरे पेड़ों, सडक़ों में अड़े दरख्तों और बस्तियों के दामन में टूटते पेड़ों से हमें नहीं बचा सकता, वहां संरक्षण के मायने आखिर हैं क्या। इस विभाग का चरित्र, दायित्व और नाम बदलकर इसे मानव एवं वन तथा पर्यावरण संरक्षण महकमा बना देना चाहिए।

किसान, कृषि 'सुप्रीम' है

प्रधानमंत्री मोदी ने साफ कहा है कि भारत अपने किसानों, डेयरीवालों, पशुपालकों और मछुआरों के हितों से कभी भी समझौता नहीं करेगा। टैरिफ वॉर के दौरान प्रधानमंत्री का अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप को यह स्पष्ट संदेश है। बेशक टैरिफ के इस मजाक के कारण भारत के निर्यातकों को नुकसान हो सकता है। उनके लिए भी सरकार पैकेज देने और नये देशों के रास्ते तलाशने का काम कर रही है। दरअसल अमरीका मक्का, सोयाबीन, सेब, बादाम और इथेनॉल जैसे उत्पादों पर शुल्क कम करने के साथ–साथ अपने डेयरी उत्पादों को भारतीय बाजार में बेचने की मांग कर रहा है, लेकिन भारत ने लगातार इंकार किया है, क्योंकि इनका सीधा असर किसानों पर पड़ेगा। प्रधानमंत्री मोदी इस कड़े रुख के लिए व्यक्तिगत रूप से भी भारी कीमत चुकाने को तैयार हैं। वह 'कीमत' क्या हो सकती है? क्या वह अपने पद से इस्तीफा दे सकते हैं? जो नया प्रधानमंत्री आएगा, क्या वह इन अमरीकी मांगों पर समझौता कर सकता है? बेशक भारत ने उचित और तार्किक कदम उठाया है कि अमरीका के लिए कृषि, डेयरी, मछली आदि उद्योगों के बाजार नहीं खोले। भारत लगातार इंकार करता रहा है। यही बुनियादी कारण है कि दोनों देशों के बीच व्यापार–समझौते की बात भी रुक गई है। अमरीका से जिस वार्ताकार टीम का 25 अगस्त को भारत आना तय था, अब वह भी नहीं आएगी। भारत की 42 फीसदी आबादी खेती पर आश्रित है और 46 फीसदी कामगारों को रोजगार हासिल है। कुछ अंचल ऐसे हैं, जहां यह औसत 60 फीसदी से अधिक है। हालांकि जीडीपी में कृषि क्षेत्र का योगदान 20 फीसदी से भी कम है। भारत में ज्यादातर किसान छोटे और गरीब हैं। नाबार्ड की हालिया रपट बताती है कि खेतिहार परिवार की औसत आय 13,661 रुपए प्रति माह है। खेती से असल आय 4476 रुपए है। शेष आय मजदूरी जैसे अन्य कामों से ही नसीब हो पाती है। अमरीका की अत्यधिक और उच्च स्तर की मशीनीकृत खेती के सामने हमारे छोटे, गरीब किसान कहां ठहर सकते हैं। मोदी सरकार की यही सोच और दृष्टि रही है और हमारे वाणिज्य–उद्योग मंत्रालयों के वार्ताकार साफ इंकार करते रहे हैं कि कृषि को अमरीका के लिए बिलकुल भी नहीं खोला जा सकता। प्रधानमंत्री मोदी ने भी बार–बार कहा है कि हमारे लिए हमारे किसानों का कल्याण ही 'सुप्रीम' है। हम इस मुद्दे पर सहमत नहीं हो सकते। दरअसल यह ऐसा समय है, जब भारत में किसानों का कल्याण 'संरक्षणवाद' के परे भी होना चाहिए। सवाल उठाए जा सकते हैं कि प्रधानमंत्री किसानों की आय दोगुनी नहीं कर सके।

वोट चोरी आयोग

बिहार में सर प्रक्रिया को लेकर उठे सवाल, जबकि यह प्रक्रिया बिहार से शुरूआत के बाद, आने वाले महीनों तथा वर्ष में देश भर में लागू करने की चुनाव आयोग ने घोषणा कर रखी है, स्वाभाविक रूप से नेता विपक्ष द्वारा उठाए गए मतदाता सूचियों में बड़े पैमाने पर गड़बड़ियों के माध्यम से चुनाव धांधली के सवालों के साथ जुड़ गए हैं। याद रहे कि मतदाता सूचियों में हेराफेरी के जरिए, चुनाव नतीजों को प्रभावित करने की कोशिश के आरोप भी कोई अब ही अचानक नहीं लग रहे हैं। भू–राजनीति बदलाव चुनाव आयोग और उसकी पीठ के पीछे हाथ रखे भाजपा को अगर लग रहा था कि चुनाव गड़बड़ियों का और खासतौर पर मतदाता सूचियों में गड़बड़ियों का मुद्दा दो–चार दिन खबरों में रहने के बाद ठंडा पड़ जाएगा, तो यह उनका मुगालता ही साबित होता लगता है। इस मुद्दे ने करीब संसद के पूरे सत्र को और खासतौर पर ऑपरेशन सिंदूर पर बहस के बाद से तो शब्दशः ही पूरे सत्र को, घेरे रखा है। बेशक, मोदी सरकार ने इस मुद्दे पर, विशेष रूप से बिहार में चुनाव आयोग द्वारा शुरू की गयी मतदाता सूचियों के विशेष सघन पुनरीक्षण (एसआइआर) की प्रक्रिया को लेकर उठे भारी विवादों तथा तीखे सवालों के बावजूद, इस पर कोई चर्चा ही नहीं होने देने की अपनी जिद में, यह पूरा सत्र ही पानी में बह जाने देने का मन बना लिया लगता है।

लेकिन, उसके संसद में इस मुद्दे पर चर्चा ही नहीं होने देने से भी, यह मुद्दा किसी तरह से ठंडा नहीं पड़ा है। उल्टे इसी दौरान संसद के बाहर, लोकसभा में विपक्ष के नेता द्वारा किए गए आम तौर पर पिछले कुछ चुनावों और खासतौर पर 2024 के आम चुनाव में, मतदाता सूचियों की रिगिंग के जरिए वोट चोरी के भंडाफोड़ के बाद से, चुनाव आयोग के कार्यकलाप बहुत गहरे संदेहों के घेरे में आ गए हैं।

इसी की अभिव्यक्ति के रूप में 11 अगस्त को प्रायः समूचे विपक्ष के सांसदों ने एकजुट होकर, संसद भवन से चुनाव आयोग तक विरोध मार्च निकाला और चुनाव आयोग से तीखे सवाल किए। आने वाले महीनों तथा वर्ष में देश भर में लागू करने की चुनाव आयोग ने घोषणा कर रखी है, स्वाभाविक रूप से नेता विपक्ष द्वारा उठाए गए मतदाता सूचियों में बड़े पैमाने पर गड़बड़ियों के माध्यम से चुनाव धांधली के सवालों के साथ जुड़ गए हैं।

याद रहे कि मतदाता सूचियों में हेराफेरी के जरिए, चुनाव नतीजों को प्रभावित करने की कोशिश के आरोप भी कोई अब ही अचानक नहीं लग रहे हैं। आम चुनाव से पहले,उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी ने, दिल्ली में विधानसभाई चुनाव से पहले आम आदमी पार्टी ने और महाराष्ट्र में विधानसभाई चुनाव से पहले विपक्षी गठबंधन ने, काफी ठोस रूप में फर्जीवाड़े के आरोप लगाए थे, जिनके संबंध अब ये पार्टियां चुनाव आयोग द्वारा कुछ नहीं किए जाने के आरोप लगा रही हैं। इस सबने मिलकर चुनाव प्रक्रिया की निष्पक्षता पर सवालों को बहुत आगे बढ़ा दिया है। अब उसे लिमिटेड करने का प्रयास दूसरी ओर, सत्ताधारी भाजपा के पीठ पर हाथ रखे होने के सहारे चुनाव आयोग, इस सारे विवाद के बीच अपने आचरण में अपारदर्शिता और गैर–जवाबदेही की उसी संस्कृति का खुला प्रदर्शन कर रहा है, जो मोदी निजाम की खास निशानी ही बन चुकी है। एकदम हाल की ही बात करें तो, एक नहीं दो–दो प्रसंगों में चुनाव आयोग का आचरण खासी दीदादिलेरी का ही लगता है, जो स्वाभाविक रूप से उसकी निष्पक्षता और ईमानदारी पर सवालों को और तीखा ही बना रहा है। जाहिर है कि इनमें पहला प्रसंग तो नेता विपक्ष द्वारा एक खुले संवाददाता सम्मेलन के जरिए, सार्वजनिक मंच पर रखे गए तथ्यों के सामने, चुनाव आयोग की प्रतिक्रिया का ही है। संवाददाता सम्मेलन में, खुद चुनाव आयोग के ही दस्तावेजों से निकाले गए साक्ष्यों के साथ, नमूने के तौर पर यह दिखाया गया कि बंगलूरु सेंट्रल लोकसभाई क्षेत्र में, आठ में से सात विधानसभाई क्षेत्रों में कांग्रेस उम्मीदवार से पिछड़ने के बावजूद, अगर भाजपा जीतने में कामयाब हो गयी, तो यह 'चमत्कार' आठवें विधानसभाई क्षेत्र में, एक लाख से ज्यादा फर्जी मतदाताओं को रोपे जाने का ही नतीजा था। महादेवपुरा नामक इस विधानसभाई क्षेत्र में फर्जी मतदाताओं को रोपने के लिए एक नहीं, कम से कम पांच अलग–अलग तरीके अपनाए गए थे। इसमें डुप्लीकेट वोटरों का हिस्सा ही 12,000 के करीब था। इसी तरह, करीब 40 हजार मतदाताओं के पते प्रकटतः नकली थे, जिनमें 30 हजार के मामले में पते के रूप में एक या एक से अधिक संख्या में शून्य भर थे, जबकि 9 हजार के मामले में पते के तौर पर इलाके का नाम भर दिया गया था। 10,452 वोट थोक में कुछ पतों पर बनाए गए थे, जिनमें एक–एक कमरे के घरों के पते पर अस्सी–अस्सी वोट तक बनाए गए थे।

सपा ने निकाला... अब इस पार्टी का दामन थामेंगी विधायक पूजा पाल? इसलिए समाजवादी पार्टी ने किया निष्कासन

गोरखपुर,संवाददाता। समाजवादी पार्टी ने बागी विधायक पूजा पाल को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया है। कौशांबी की चायल विधानसभा सीट से विधायक पूजा ने पिछले साल राज्यसभा चुनाव में भाजपा के पक्ष में वोटिंग की थी। अब उन्होंने सीएम योगी की तारीफ की थी। कौशांबी जिले की चायल विधानसभा सीट से समाजवादी पार्टी विधायक पूजा पाल को आखिरकार पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया है। पिछले साल राज्यसभा चुनाव में उन्होंने भाजपा के पक्ष में वोटिंग की थी। उस समय से अब तक उन पर कोई कार्रवाई नहीं की गई थी। विधायक और हाईकमान के बीच तल्खियां तो काफी दिन से चली आ रही थीं। लेकिन बृहस्पतिवार को जब विधायक पूजा पाल ने सदन में खुलकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तारीफ की तो सपा अध्यक्ष ने निष्कासन पत्र भिजवा दिया।

अब राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि बसपा, सपा के बाद पूजा किसी नई पार्टी का दामन थाम सकती हैं। राज्यसभा चुनाव में सपा के सात विधायकों ने क्रॉस वोटिंग की थी। अप्रैल 25 में विधायक मनोज पांडेय, अभय सिंह और राकेश सिंह को पार्टी से बाहर किया गया लेकिन पूजा पाल पर पार्टी ने कोई कार्रवाई नहीं की थी। उस समय पार्टी ने कहा था कि पूजा को सुधार का मौका दिया गया। लेकिन पर्दे की पीछे की बात यह थी कि पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक (पीडीए) के फार्मूला पर राजनीति कर रहे सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ऐसा कुछ नहीं करना चाहते थे कि पाल बिरादरी में कोई गलत संदेश चला जाए और भाजपा उसको भुना ले।

उमेश पाल हत्याकांड के बाद बदलने लगा था पूजा का रुख

पूजा पाल 2022 के विधानसभा चुनाव में चायल सीट से सपा के टिकट पर विधायक बनी थीं। उमेश पाल हत्याकांड के बाद पूजा का रुख बदलने लगा। वह भाजपा के करीब होने लगीं। उनके आचरण और बयानों को लेकर पार्टी में असंतोष बढ़ रहा था।

लोकसभा चुनाव में भी पूजा ने दिया भाजपा का साथ

लोकसभा चुनाव के दौरान भी उन्होंने भाजपा का साथ दिया। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, विधायक के आचरण की लगातार निगरानी की जा रही थी। निष्कासन के बाद पूजा पाल की ओर से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है। हालांकि, उन्होंने लखनऊ में खुलकर कहा कि अतीक के आपराधिक साम्राज्य का खात्मा कर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उन्हें न्याय दिलाया। इस मामले में सपा का दोहरा चरित्र सामने आया है। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि पूजा पाल का भाजपा में जाना तय है। उन्हें मंत्री पद भी दिया जा सकता है। सपा में रहते हुए वह मंत्री नहीं बन सकती थीं। अब रास्ता साफ हो गया।

पार्टी विरोधी काम करने वाला बाहर होगा

सपा प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल का कहना है कि जो भी पार्टी विरोधी कार्य करेगा, उसे पार्टी से निष्कासित किया जाएगा। पूजा पाल पार्टी विरोधी गतिविधियों में लिप्त थीं, उन्हें सुधारने का अवसर जून माह में चेतावनी के साथ दिया गया था लेकिन कोई तब्दीली नहीं आई। इसलिए उन्हें बाहर का रास्ता दिखाना पड़ा है।

विधायक पल्लवी पटेल का रुख भी अस्पष्ट

कौशाम्बी में तीनों विधानसभा सीटों पर सपा का कब्जा रहा लेकिन उसके दो विधायकों ने बगावत की राह चुन ली थी। अपना दल कमेरावादी की नेता पल्लवी पटेल सिराथू से सपा के टिकट पर विधायक बनीं। पिछले लोकसभा चुनाव में टिकट को लेकर उनकी भी पार्टी से ठन गई। तब से वह भी पार्टी से दूरी बनाए हुए हैं। हालांकि, अभी उन्होंने अपना रुख अस्पष्ट नहीं किया है। राजनीतिक हलकों में इसे सपा के भीतर बढ़ते असंतोष और आगामी चुनावी समीकरणों में बदलाव के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

15 विधानसभा क्षेत्रों में सात पर सपा ने लहराया था परचम

कौशांबी जिले की तीन विधानसभाओं में तीनों पर सपा का कब्जा है। विधानसभा चायल से पूजा पाल, सिराथू से पल्लवी पटेल और मंझनपुर से इंद्रजीत सरोज विधायक हैं। वहीं प्रयागराज की 12 विधानसभा क्षेत्रों में चार पर सपा का कब्जा है। विधानसभा हंडिया से हाकिमलाल बिंद, मेजा से संदीप पटेल, सोरांव से गीता पासी, प्रतापपुर से विजमा यादव विधायक हैं। विधायकों का कहना है कि पूजा पाल सिर्फ चुनाव जीतने के लिए सपा में आई थीं।

घर बंटवारे का विवाद बना जानलेवा गोरखपुर में बेटे ने पिता के सिर पर फावड़े से किया हमला– मौत, बेटा गिरफ्तार

गोरखपुर,संवाददाता। 65 वर्षीय भागवत मिश्रा का शुक्रवार देर रात बेटे राधेश्याम से घर के बंटवारे को लेकर झगड़ा हो गया। विवाद इतना बढ़ा कि राधेश्याम ने आक्रोश में फावड़े से पिता के सिर पर जोरदार वार कर दिया। गंभीर चोट लगने से भागवत मिश्रा लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़े। परिवार के अन्य सदस्य उन्हें तत्काल अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। घटना की खबर मिलते ही एम्स थाने की पुलिस मौके पर पहुंची। फॉरेंसिक टीम ने भी पहुंचकर साक्ष्य जुटाए। एसपी सिटी अभिनव त्यागी ने बताया कि घटना में हत्या में इस्तेमाल किया गया फावड़ा बरामद कर लिया गया है। आरोपित बेटे राधेश्याम से पूछताछ की जा रही है। मृतक की पत्नी और अन्य परिवारजन के बयान दर्ज किए जा रहे हैं। साक्ष्य और बयानों के आधार पर हत्या का मुकदमा दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

65 वर्षीय भागवत मिश्रा का शुक्रवार देर रात बेटे राधेश्याम से घर के बंटवारे को लेकर झगड़ा हो गया। विवाद इतना बढ़ा कि राधेश्याम ने आक्रोश में फावड़े से पिता के सिर पर जोरदार वार कर दिया। गंभीर चोट लगने से भागवत मिश्रा लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़े। रजही रामसरिया गांव में शुक्रवार की देर रात घर के बंटवारे को लेकर शुरू हुआ विवाद जानलेवा हो गया। बेटे ने पिता पर सिर पर फावड़े हमला कर दिया। गंभीर हालत में पिता को अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां इलाज के दौरान पिता की मौत हो गई। सुचना पाकर मौके पर पहुंचील एम्स थाने की पुलिस ने मौके से ही आरोपी बेटे को गिरफ्तार कर लिया। निशानदेही पर फावड़ा भी बरामद कर लिया।

किशोरी पर बाघ ने किया हमला... सहमें ग्रामवासी– गंभीर रुप से घायल

कुशीनगर,संवाददाता। गाँव के सटे सोहगीबरवा वन्यजीव अभयारण्य तथा वाल्मीकि टाइगर रिजर्व के जंगल हैं। यहाँ से हिंसक जानवर ग्रामीण क्षेत्र में पहुंच जाते हैं। लोगों में भय व्याप्त है। जहां घटना हुइ है वह क्षेत्र खडडा वन क्षेत्र अन्तर्गत आता है। कुशीनगर जिले के गंडक नदी पार खडडा क्षेत्र के बसंतपुर गाँव के सरेह में घास काट रही 14 वर्षीय किशोरी पर बाघ ने हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। उसे इलाज के लिए महराजगंज ले जाया गया, जहां अस्पताल में भर्ती है। महराजगंज जनपद के सोहगीबरवा गाँव की रहने वाली नमिता पुत्री सुग्रीव उर्फ गोबर शुक्रवार दोपहर बाद खडडा क्षेत्र की सीमा मे बसंतपुर गाँव के सरेह में गाँव के ही कुछ सहेलियो के साथ गन्ने के खेत में घास काट रही थी। तभी नमिता पर बाघ ने हमला कर दिया और खींच कर ले जाने लगा।

साथ की बच्चियों ने शोर मचाया तो रमइ प्रसाद व दो और लोग शोर मचाते हुए दौड़े। तब जाकर बाघ ने लड़की को छोड़ा। उसे गंभीर हाल में सोहगीबरवा ले जाया गया ,जहां से इलाज हेतु महराजगंज जिला अस्पताल भेज दिया गया। बताते चलें कि इन गाँव के सटे सोहगीबरवा वन्यजीव अभयारण्य तथा वाल्मीकि टाइगर रिजर्व के जंगल हैं।

यहाँ से हिंसक जानवर ग्रामीण क्षेत्र में पहुंच जाते हैं। लोगों में भय व्याप्त है। जहां घटना हुइ है वह क्षेत्र खडडा वन क्षेत्र अन्तर्गत आता है। सोहगीबरवा वन्यजीव अभयारण्य के शिवपुर रेंज के फारेस्टर रामफेर का कहना है कि वह क्षेत्र खडडा रेंज में पड़ता है। फिर भी टीम गयी थी। लोगों ने बताया है कि बाघ ने ही हमला किया था। वन निगम टीम इसकी जांच कर रही है।

गोरखपुर वानिकी विश्वविद्यालय नक्शा और एक्ट बनकर तैयार कैबिनेट में पास होने का इंतजार

गोरखपुर में वानिकी विश्वविद्यालय का निर्माण कार्य जल्द ही शुरू होने वाला है। विश्वविद्यालय का नक्शा एक्ट और डीपीआर तैयार हो चुका है और शासन को रिपोर्ट भेज दी गई है। मंजूरी मिलते ही कुलपति का चयन होगा और निर्माण शुरू हो जाएगा। विश्वविद्यालय में छात्रों के लिए छात्रावास खेल का मैदान और चार विषयों की पढ़ाई की व्यवस्था होगी।

संवाददाता, गोरखपुर। वानिकी विश्वविद्यालय का नक्शा, एक्ट और डीपीआर तैयार हो गया है। वन विभाग ने इसकी रिपोर्ट शासन के पास भेज दी है। अगर कोई संशोधन नहीं हुआ तो कैबिनेट की बैठक में इसे पास किया जाएगा। जिसके बाद कुलपति का चयन और शिलान्यास के बाद भवन का निर्माण शुरू होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने छह सितंबर 2024 को कैंपियरगंज के भारीवैसी में बने जटायु संरक्षण एवं प्रजनन केंद्र का लोकार्पण किया था। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को वानिकी विश्वविद्यालय खोलने के लिए जमीन चिन्हित करने का भी निर्देश दिया था।

जिसके बाद वन विभाग ने कई जगह जमीन देखी। लेकिन, अंत में संरक्षण केंद्र के बगल में स्थित जंगल में खाली पड़ी 50 हेक्टेयर जमीन चिन्हित हुई। फोरलेन किनारे होने और 24 घंटे आवागम के लिए साधन उपलब्ध होने से शासन ने चिन्हित जमीन को फाइनल कर दिया। इसके बाद शासन के निर्देश पर विश्वविद्यालय के भवन का डीपीआर, नक्शा और एजुकेशन एक्ट तैयार करने को कहा गया। जिसे वन विभाग ने विशेषज्ञों के साथ मिलकर एक्ट समेत अन्य तैयार कर रिपोर्ट शासन के पास भेज दी। डीएफओ विकास यादव ने बताया कि नक्शा और डीपीआर में किसी तरह का संशोधन नहीं होगा तो कैबिनेट की बैठक में पास होने के लिए जाएगा। इसके बाद यह पूरा मामला स्वायत्त संस्था के पास चला जाएगा। जहां से कुलपति का चयन और टेंडर निकालकर भवन निर्माण या अन्य कार्य होंगे।

खेल मैदान समेत होगा 500 कमरे का हॉस्टल

डीएफओ ने बताया कि विश्वविद्यालय के डीपीआर और नक्शे में छात्र–छात्राओं के लिए 500 कमरे का अलग–अलग हॉस्टल, प्रशासनिक भवन, क्लास रूम, आडोटोरियम, लैब और खेल का मैदान है। इसके अलावा प्रोफेसरों के रहने के लिए भी आवास है। यह सबकुछ एक ही परिसर में होगा।

अभी तक चार विषयों की पढ़ाई के लिए एक्ट बनाया गया है। जिसमें वानिकी (फारेस्ट्री), कृषि वानिकी, सामाजिक वानिकी, और औद्यानिक (हार्टिकल्चर) जैसे विषयों की पढ़ाई होगी। इसके अलावा, यहां पर विभिन्न डिग्री और डिप्लोमा कोर्स भी संचालित होंगे।

वानिकी में वन प्रबंधन, वन पारिस्थितिकी, वनस्पति विज्ञान, वन्यजीव संरक्षण, और वन उपज का अध्ययन होगा। वहीं कृषि वानिकी में वन और कृषि के बीच के संबंधों की पढ़ाई होगी। सामाजिक वानिकी में समुदाय की भागीदारी के साथ वनों का प्रबंधन और विकास शामिल होगा। औद्यानिक विषय में फल, फूल, और सब्जियों जैसे पौधों की खेती से संबंधित पढ़ाई होगी। आसपास जंगल के होने और गिद्ध संरक्षण केंद्र में पक्षियों के होने से छात्रों को शोध करने में भी आसानी होगी।

गोरखपुर में विरासत गलियारा अब आठ मीटर चौड़ा होगा, सीएम योगी आदित्यनाथ ने दी स्वीकृति

गोरखपुर में धर्मशाला से पांडेयहाता तक बन रहे विरासत गलियारे की चौड़ाई अब 7 नहीं 8 मीटर होगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने डक्ट की चौड़ाई को आधा मीटर करने की स्वीकृति दी है जिससे सड़क एक मीटर चौड़ी हो जाएगी। लोक निर्माण विभाग ने डिजाइन में बदलाव किया है। नाले और डक्ट की चौड़ाई को लेकर कई दिनों से काम रुका हुआ था। गलियारे की कुल चौड़ाई 12.5 मीटर है।

संवाददाता, गोरखपुर। धर्मशाला से पांडेयहाता तक बन रहा तकरीबन साढ़े तीन किलोमीटर लंबा विरासत गलियारा अब सात नहीं बल्कि आठ मीटर चौड़ा होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की स्वीकृति के बाद लोक निर्माण विभाग ने एक–एक मीटर चौड़ाई में बन रहे डक्ट की चौड़ाई अब आधा–आधा मीटर कर दी है। इससे सड़क की चौड़ाई एक मीटर बढ़ जा रही है। आधे मीटर के डक्ट में बिजली निगम के केबल आसानी से गुजारे जाएंगे। विरासत गलियारा में नाले और डक्ट की चौड़ाई को लेकर कई दिनों से मंथन चल रहा था। इस कारण काम भी ठप पड़ा हुआ था। लोक निर्माण विभाग ने डिजाइन में आंशिक संशोधन कर इसे मुख्यमंत्री के सामने प्रस्तुत करने की योजना बनाई थी। पिछले दिनों गोरखपुर दौरे पर आए मुख्यमंत्री के सामने नई डिजाइन को रखा गया। मुख्यमंत्री ने सभी बिंदुओं को देखा और फिर डक्ट की चौड़ाई आधी करने के निर्देश दिए।

कुल चौड़ाई है 12.5 मीटर

विरासत गलियारे की पूरी चौड़ाई 12.5 मीटर है। इसमें दोनों ओर एक मीटर नाला और एक मीटर डक्ट सहित दोनों ओर 2.5–2.5 मीटर जमीन लेने के बाद शेष सात मीटर में सड़क बनाई जा रही थी। अब 15 सेमी की दीवार, एक मीटर चौड़ा नाला के बाद 20 सेमी दीवार और 50 सेमी चौड़ाई के डक्ट के बाद 15 सेमी की दीवार बनाई जाएगी। दोनों ओर दो–दो मीटर में ड्रेन और डक्ट बनाई जाएगी, जिसमें एक मीटर जगह बचेगी, जिससे सड़क की चौड़ाई सात से बढ़कर आठ मीटर हो जाएगी।

इटौंजा में बाढ़ से घिरे गांव

खेतों में भरा पानी... फसलें डूबी, सड़कों पर जलभराव से आवागमन बाधित

खेतों में पानी भरने से फसलें डूबी

लखनऊ,संवाददाता

लखनऊ में इटौंजा क्षेत्र के कई गांव बाढ़ से घिरे हैं। खेतों में पानी भरने से फसलें डूब गई हैं। सड़कों पर जलभराव से आवागमन बाधित है। डीएम ने निरीक्षण करके वहां का हाल जाना। अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। राजधानी लखनऊ में गोमती नदी के बढ़े जलस्तर से इटौंजा क्षेत्र के लासा और बहादुरपुर गांव में बाढ़ के हालात बन गए हैं। नदी किनारे बसे इन गांवों के किसानों के खेतों में बाढ़ का पानी भर जाने से उनकी धान, लौकी, तोरई, भिंडी, करेला आदि की फसल जलमग्न हो गई है। पशुओं के लिए चारे का भी संकट पैदा हो गया है। डीएम विशाख जी ने दोनों प्रभावित गांवों का निरीक्षण कर लासा गांव में कंट्रोल रूम स्थापित कर वहां नायब तहसीलदार, कानूनगो, लेखपाल व सचिव को कैंप करने के निर्देश दिए। अधिकारियों के साथ बसहरी पुल से बाढ़ की स्थिति का निरीक्षण किया।

स्वास्थ्य कर्मी 24 घंटे मौजूद रहेंगे

डीएम बाढ़ ग्रस्त गांव लासा और सुल्तानपुर पहुंचे। इसके बाद उन्होंने बहादुरपुर गांव का भी जायजा लिया। बीकेटी एसडीएम साहिल कुमार को लासा गांव में बाढ़ कंट्रोल रूम स्थापित कराने के साथ हालात पर पूरी तरह नजर रखने के निर्देश दिए।

डीएम ने कहा कि कंट्रोलरूम पर पशु चिकित्सा और ग्रामीणों की स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं के लिए भी स्वास्थ्य कमह्न 24 घंटे मौजूद रहेंगे। बाढ़ में सांपों का खतरा बना रहता है। इसलिए एंटीवेनम इंजेक्शन यहां पर उपलब्ध रहना चाहिए।

बाढ़ प्रभावित गांव में राशन के साथ माचिस, मोमबत्ती भी मिलेगी

डीएम ने तहसीलदार बीकेटी को पूर्ति विभाग के अधिकारी से वार्ता कर सरकारी राशन की दुकान पर खाद्यान्न के साथ मोमबत्ती, माचिस उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। डीएम ने कहा कि पानी बढ़ने की आशंका को ध्यान में रखते हुए सुल्तानपुर, बहादुरपुर, लासा, मैकूपुरवा, इकडरिया खुर्द, इकडरिया कला गांवों में नावों का इंतजाम कर लिया जाए। रात में बीमार ग्रामीण को बाहर निकालने के लिए एसडीआरएफ की मोटरबोट मौजूद रहे।

नदी खतरे के निशान से पांच सेमी नीचे, सड़कों पर जलभराव

उफनाई गोमती का जलस्तर हालांकि अभी बढ़ रहा है, लेकिन यह नदी अभी खतरा निशान 109 मीटर से पांच सेमी नीचे बह रही है। इसके बाद भी नदी का पानी इटौंजा में लासा, सुल्तानपुर, बहादुरपुर गांव की मुख्य सड़कों पर एक से डेढ़ फिट भर गया है। इससे लोगों को आवागमन में काफी दिक्कत हो रही है। लगातार बढ़ते जलस्तर को लेकर क्षेत्र के ग्रामीण काफी चिंतित है।

धड़ से अलग किया तमन्ना का सिर...

बाप-सौतेली मां और नाना ने इस वजह से मारा बहुत समझाया लेकिन वो नहीं मानी

हाथरस,संवाददाता । प्रेमी से शादी की जिद पर अड़ी बेटी की परिवार ने हत्या कर दी। हत्या के बाद धड़ और सिर अलग–अलग फेंके। पुलिस ने पिता–सौतेली मां और नाना गिरफ्तार कर लिया है। पिता ने कहा कि बेटी दो दफा प्रेमी के साथ घर से जा चुकी थी। उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले से दिल दहलाने वाली खबर सामने आई है। प्रेमी के साथ शादी की जिद पर अड़ी युवती की हत्या कर दी गई। पुलिस ने युवती के पिता, सौतेली मां और नाना को गिरफ्तार करके घटना का खुलासा किया है।

गिरफ्तार पिता ने पुलिस को बताया कि वह एक युवक से शादी करना चाहती थी जिसका चाल–चलन ठीक नहीं था। परिवार वालों ने उसे बहुत समझाया मगर नहीं मानी। वह उसके साथ दो दफा घर से जा चुकी थी। बिरादरी में बदनामी हो रही थी इसलिए उसे मार डाला।आरोपियों को मंगलवार सुबह सलेमपुर बंवा से गिरफ्तार किया गया। सादाबाद के गांव बहरदोई में खेतों से होकर जा रहे रजबहे में दो दिन पहले 10 अगस्त को एक युवती का बोरे में बंद धड़ मिला था। कुछ ही दूरी पर उसका सिर भी मिल गया था।

घर का ताला लगाकर फरार हुए आरोपी

पुलिस ने शव की पहचान के लिए ग्राम प्रधानों के व्हाटसएप ग्रुप पर फोटो शेयर की। जिससे उसकी शिनाख्त अलीगढ़ में अकराबाद क्षेत्र के गांव अधीना निवासी हसरत अली की बेटी तमन्ना (21) के रूप में हुई। पुलिस जब गांव पहुंची तो घर पर ताला लगा था और परिवार के सभी लोग फरार थे।

पुलिस ने तीनों को पकड़ा

एसपी चिरंजीव नाथ सिन्हा ने बताया कि इस मामले में तमन्ना के पिता हसरत अली, उसकी दूसरी पत्नी रानी, रानी के पिता रज्जो पहलवान उर्फ राजू निवासी अल्हेपुर थाना चंदपा हाथरस को गिरफ्तार किया है।

प्रेमी से शादी की जिद पर अड़ी थी तमन्ना

इन्होंने पूछताछ में पुलिस को बताया कि तमन्ना के एक युवक से प्रेम संबंध थे। वह दो दफा उसके साथ घर से चली गई थी। बार–बार समझाने के बाद भी उसी से शादी की जिद पर अड़ी थी। एसपी ने बताया कि हसरत ने अपने ससुर रज्जो पहलवान और पत्नी के साथ मिलकर हत्या की साजिश रची और तमन्ना को लेकर आठ अगस्त को अल्हेपुर स्थित अपनी ससुराल पहुंच गया।

प्रदेश में बदले स्कूली बच्चों को दंड देने के नियम

अब किसी प्रकार की शारीरिक हिंसा नहीं कर सकेंगे अध्यापक

लखनऊ,संवाददाता। यूपी के प्राथमिक स्कूलों में बच्चों को दंड देने के मामले में बदलाव किया गया है। अध्यापक अब किसी प्रकार की शारीरिक हिंसा नहीं कर सकेंगे। प्रदेश के निजी व सरकारी विद्यालयों में गुरु जी न तो बच्चों को फटकारेंगे, न छड़ी से पीटेंगे, न चिकोटी काटेंगे न चाटा मारेंगे। बेसिक शिक्षा विभाग की ओर से विद्यालयों में पढ़ने वाले सभी बच्चों को किसी भी प्रकार के शारीरिक व मानसिक दंड न दिए जाने के निर्देश का सख्ती से पालन कराने का निर्देश दिया गया है। विभाग की ओर से राष्ट्रीय बालक अधिकार संरक्षण आयोग की ओर से जारी निर्देश का हवाला देते हुए कहा है कि विद्यालय में पढ़ रहे बच्चों को किसी प्रकार की शारीरिक व मानसिक दंड न दिए जाने के विस्तृत निर्देश दिए गए हैं। इसका व्यापक प्रचार–प्रसार करते हुए बच्चों को भी बताएं कि वे इसके विरोध में अपनी बात कह सकते हैं। इसे संबंधित अधिकारियों के संज्ञान में लाएं।

महानिदेशक स्कूल शिक्षा कंचन वर्मा की ओर से सभी बीएसए को निर्देश दिया गया है कि हर स्कूल जिसमें छात्रावास हैं, जेजे होम्स, बाल संरक्षण गृह भी शामिल हैं, में एक ऐसी व्यवस्था की जाए, जहां बच्चे अपनी बात रख सकें। ऐसे संस्थानों में किसी एनजीओ की सहायता ली जा सकती है। हर स्कूल में एक शिकायत पेटिका भी होनी चाहिए, जहां छात्र अपनी शिकायत दे सकें। अभिभावक शिक्षक समिति शिकायतों की समीक्षा करें। शिकायतों पर त्वरित कार्यवाही की जाए। उन्होंने कहा है कि शिक्षा विभाग ब्लॉक, जिला व राज्य स्तर पर ऐसी व्यवस्था करें कि बच्चों की शिकायत व कार्यवाही की समीक्षा की जा सके।

विशाल की इस बात से तिलमिला उठा अरविन्द, दोनों को मार डाला

झांसी। झांसी में डबल मर्डर मामले में बड़ा खुलासा हुआ है। आरोपी डेढ़ माह से दोहरे हत्याकांड की प्लानिंग कर रहा था। आरोपी अरविंद अपनी बहन के प्रेमी से मिली चुनौती से तिलमिला उठा था। दोस्त की मदद से आरोपी अरविंद ने पहले रेकी कराई। बहन के प्रेमी को गांव आते ही मार डाला। फिर बहन की हत्या कर दी।

झांसी में झूठी आन की खातिर छोटी बहन और उसके प्रेमी की हत्या करने का आरोपी अरविंद अहिरवार पिछले करीब डेढ़ महीने से इस वारदात की प्लानिंग पुणे में बैठकर कर रहा था। रेकी के लिए अपने प्रकाश प्रजापति को तैयार कर लिया था। अपने मंसूबों के बारे में परिवार को भी बता दिया था, लेकिन परिवार ने घटना के बाद अपनी जुबान खोली। परिवार की चुप्पी की वजह से अरविंद सनसनीखेज दोहरे हत्याकांड को अंजाम देने में कामयाब रहा।

हालांकि 24 घंटे के भीतर ही दोनों हत्यारोपी गिरफ्तार कर लिए गए। दोनों आरोपी जेल भेज दिए गए। दो दिनों की छानबीन एवं पूछताछ के दौरान पुलिस के सामने दोनों आरोपियों ने कई चौंकाने वाले राज उगले। अरविंद की बहन पुच्चू (18) को फरवरी महीने में विशाल अहिरवार (19) के साथ पुलिस ने बरामद किया था।

इसके बाद पुलिस की मौजूदगी में हुई पंचायत में दोनों के अलग रहने का फैसला हुआ। विशाल को पिता हल्केराम गुजरात लेकर चला गया। अरविंद भी पुणे जाकर प्राइवेट काम करने लगा। कुछ समय बाद अरविंद को मालूम चला कि विशाल और उसकी बहन के बीच संबंध खत्म नहीं हुए हैं। दोनों घंटों फोन पर बात करते हैं।

यह बात अरविंद को नागवार गुजरी। उसने फोन पर विशाल को धमकाने की कोशिश की तो उल्टे विशाल ने अरविंद को चुनौती देते हुए कहा कि वह उसकी बहन से बात भी करेगा और शादी भी करके दिखाएगा।

यह बात पूरे गांव में फैल गई। इससे अरविंद तिलमिला उठा। पुणे में रहते हुए उसने जून महीने में विशाल को खत्म करने की कसम खा ली। सबसे पहले अपने दोस्त प्रकाश को रेकी के लिए तैयार किया। विशाल के झांसी आते ही प्रकाश ने अरविंद को खबर कर दी। अरविंद तुरंत पुणे से झांसी के लिए रवाना हो गया। यहां आकर प्रकाश के साथ मिलकर उसने दोहरे हत्याकांड को अंजाम दिया।

गोरखपुर में हादसा

भरभराकर गिरी वन विभाग की चहारदीवारी

संवाददाता, गोरखपुर। कार्मल स्कूल की तरफ वन विभाग की जर्जर चहारदीवारी भरभराकर गिर गई। जिसमें दबकर कई राहगीर घायल हो गए। वहीं बस्ती के गांधीनगर पिकौरा निवासी विक्रम प्रसाद की हालत गंभीर की मौत हो गई है। वह एडीएम के गनर थे। सूचना पर पहुंचे कैंट के गोलघर चौकी प्रभारी ने एंबुलेंस से घायलों को जिला अस्पताल व मेडिकल कालेज भिजवाया। इसके बाद सड़क से ईंट हटवाकर अवागमन चालू कराया।

कार्मल स्कूल में पीटीएम होने से अभिभावक अपने बच्चों को लेकर इस मार्ग से आ जा रहे थे। वहीं कुछ लोगों ने बाइक खड़ी कर बच्चों का स्कूल से आने इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान सुबह 10 बजे के करीब वन विभाग की चहारदीवारी भरभराकर गिर गई। जिसकी चपेट में आने से कई लोग घायल हो गए।

वहीं बस्ती के पिकौरा गांधीनगर निवासी विक्रम प्रसाद पर चहारदीवारी गिरने से वह पेट के बल नीचे गिर गए। इसके बाद उनके शरीर पर पूरा ईंट गिर गया, उन्हें गंभीर चोटें आई। बाएं पैर की कई हड्डी टूट गई। मौके पर पहुंचे पुलिसकर्मियों ने राहगीरों की मदद से युवक को एंबुलेंस से मेडिकल कालेज भिजवाया। इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

वहीं अन्य घायलों को जिला अस्पताल भिजवाकर उपचार कराया जा रहा है। चौकी प्रभारी गोलघर अवनीश पांडेय ने बताया कि बस्ती के विक्रम प्रसाद को ज्यादा चोटें आई है। मेडिकल चौकी प्रभारी की मौजूदगी में उनका उपचार चल रहा है। वह गोरखपुर में किसी रिश्तेदार के यहां आए थे। उनके बारे में पता कर बात करने की कोशिश की जा रही है। वन विभाग के नगर रेंजर दिनेश चौरसिया ने बताया कि चहारदीवारी के पुनः निर्माण के लिए प्रस्ताव भेजा गया था।

फतेहपुर मकबरा-मंदिर विवाद

मायावती की अपील– मामले को गंभीरता से ले सरकार, जरूरत हो तो सख्त कदम उठाए

लखनऊ,संवाददाता। बसपा सुप्रीमो मायावती ने फतेहपुर में मकबरा और मंदिर को लेकर हुए बवाल पर सरकार से इस मामले को गंभीरता से लेने की अपील की है। उन्होंने कहा कि इस मामले में किसी भी समुदाय को ऐसा कदम नहीं उठाने देना चाहिए जिससे कि तनाव फैले। फतेहपुर में मकबरे के मंदिर होने का दावा करने को लेकर हुए बवाल पर बसपा सुप्रीमो मायावती ने योगी सरकार से अपील की है कि सरकार को इस मामले को गंभीरता से लेना चाहिए और जरूरत पड़े तो सख्त कदम भी उठाने चाहिए। उन्होंने एक्स पर बयान जारी कर कहा कि यूपी के जिला फतेहपुर में मकबरा व मन्दिर होने को लेकर चल रहे विवाद व बवाल पर सरकार को किसी भी समुदाय को ऐसा कोई भी कदम नहीं उठाने देना चाहिये जिससे वहां साम्प्रदायिक तनाव पैदा हो जाये तथा आपसी भाईचारा व सद्भाव भी बिगड़े। सरकार इस मामले को जरूर गंभीरता से ले तथा जरूरत पड़ने पर सख्त कदम भी उठाये।

ये है पूरा मामला

फतेहपुर में मंदिर और मकबरे के विवाद में सोमवार को भाजपा जिलाध्यक्ष के आह्वान पर हिंदू संगठनों के लोग मकबरे पर पहुंच गए और बैरीकेडिंग गिराकर मकबरे पर करीब 20 मिनट तक कब्जा कर लिया और इस दौरान मजार और कब्रों में तोड़फोड़ भी की। हिंदू संगठनों का दावा है कि यह मकबरा ठाकुरद्वारा मंदिर है। उन्होंने भगवा झंडा लहरा दिया। धूपबत्ती जलाई और नारेबाजी की। सूचना पर दूसरे समुदाय के लोग भी पहुंच गए और पथराव व मारपीट शुरू हो गई। मामले में 160 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज किया गया है।

बवाल-पथराव...मजार और कब्रों में तोड़फोड़

फतेहपुर,संवाददाता। फतेहपुर में मकबरे के मंदिर होने का दावा करते हुए सोमवार को जमकर बवाल और पथराव हुआ। हिंदू संगठनों ने धार्मिक स्थल पर 20 मिनट तक कब्जा जमाए रखा। इस दौरान मजारों और कब्रों में तोड़फोड़ की गई। धार्मिक स्थल पर भगवा लहराया। मामले में 10 नामजद समेत 160 पर केस दर्ज किया गया है। फतेहपुर में मंदिर और मकबरे को लेकर कुछ समय पहले उपजे विवाद के चलते सोमवार को बवाल हो गया। भाजपा जिलाध्यक्ष के आह्वान पर हिंदू संगठनों के कार्यकर्ता जमा हो गए। यह लोग मकबरे के ठाकुरद्वारा मंदिर होने का दावा करते हुए पुलिस की बैरिकेडिंग गिराकर परिसर तक पहुंच गए। पुलिस–प्रशासन की मौजूदगी में करीब 20 मिनट तक धार्मिक स्थल पर इन लोगों ने कब्जा जमाए रखा। भगवा लहराकर धूपबत्ती जलाई और नारेबाजी की। इस दौरान डंडों से मजार व कब्रों में तोड़फोड़ भी की गई। सूचना पर दूसरे समुदाय के लोग भी पहुंच गए। इसके बाद दोनों पक्षों में पथराव और मारपीट शुरू हो गई। डीएम रविंद्र सिंह व एसपी अनूप सिंह ने किसी तरह हालात काबू में किए। एडीजी संजीव गुप्ता ने पूरे मामले की रिपोर्ट तलब की है। मामले में 10 भाजपाइयों समेत 160 लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। एफआईआर में भाजपा के जिला पंचायत सदस्य अजय सिंह व सभासद रितिक पाल, विनय तिवारी, पुष्पराज पटेल, शामिल को भी नामजद किया गया है।

भाजपा जिलाध्यक्ष मुखलाल पाल व विहिप प्रांत उपाध्यक्ष वीरेंद्र पांडेय समेत कई हिंदू संगठन के नेताओं ने सोशल मीडिया पर मंदिर के शुद्धिकरण और नियमित पूजा–पाठ का आह्वान किया था। सोमवार सुबह नौ बजे से ही धार्मिक स्थल के करीब डाक बंगले के सामने कर्पूरी ठाकुरी चौराहे पर बड़ी संख्या में भाजपा, हिंदू संगठनों के कार्यकर्ता पहुंचने लगे।

बैरिकेडिंग तोड़ इमारत तक पहुंचे कार्यकर्ता

पहले यहां जमकर नारेबाजी की गई। एएसपी महेंद्र पाल सिंह और एडीएम अविनाश त्रिपाठी, सीओ सिटी गौरव शर्मा ने इन्हें समझाने का प्रयास किया। इसी बीच करीब 11 बजे बैरिकेडिंग तोड़कर हिंदू संगठनों के 300 से अधिक कार्यकर्ता इमारत तक पहुंच गए। पुलिस बल के सामने ही अंदर परिसर में घुसकर तोड़फोड़ की। अखिल भारत हिंदू महासभा के प्रांतीय उपाध्यक्ष मनोज त्रिवेदी व कई कार्यकर्ताओं ने पूजा–अर्चना की। मजारों पर लाठी डंडे पटके। पुलिस के रोकने के बावजूद प्रमुख स्थानों पर भगवा झंडा लगा दिया गया। 20 मिनट के बाद कार्यकर्ता मौके से हटे। स्थल से करीब 50 मीटर दूर मौजूद दूसरे समुदाय की भीड़ भगवा झंडा देखकर भड़क गई। दोनों पक्षों के बीच नोकझोंक के दौरान पथराव शुरू हो गया। पथराव व भगदड़ में बजरंग दल के संयोजक धर्मेंद्र सिंह जनसेवक, धर्म प्रसार सह प्रमुख खजुहा प्रखंड रामप्रताप अनुरागी, बिंदकी के बजरंग दल के सह संयोजक सजल को चोटें आई।

मौके पर ही करीब दो घंटे तक दोनों पक्षों के बीच नारेबाजी व हंगामे का दौर चलता रहा। बाद में एडीजी संजीव गुप्ता मौके पर पहुंचे और जानकारी ली। उन्होंने सतर्कता की कमी पर पुलिस अधिकारियों से नाराजगी जताई। मामला बढ़ने पर कौशांबी और बांदा जिले से पुलिस फोर्स बुला ली गई।

ऐसे शुरू हुआ विवाद

शहर के आबूनगर रेड्डया में प्राचीन धार्मिक स्थल है। कई वर्षों से एक समुदाय के लोग इसके अनुयायी हैं। मंदिर मठ संरक्षण संघर्ष समिति के सदस्य धनंजय द्विवेदी समेत अन्य लोगों ने सात अगस्त को डीएम रविंद्र सिंह को एक मांगपत्र सौंपकर स्थल को प्राचीन ठाकुरद्वारा मंदिर बताया था। इसमें नए सिरे से रंगाई–पुताई और बिना अनुमति के मजारों के स्थापित किए जाने का दावा किया गया था। समिति की ओर से सोमवार को यहां साफ–सफाई कर पूजा पाठ की बात कही गई थी। सभी लोगों को समझाकर घर भेज दिया गया है। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए करीब 10 थानों की फोर्स व एक प्लाटून पीएसी व गैर जिलों से फोर्स बुलाया गया है। झंडे हटा दिए गए हैं। उपद्रवियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। –अनूप सिंह, एसपी

मौके पर दोनों समुदाय के लोग थे। सभी से बातचीत कर शांति व्यवस्था बनाई गई है। इस विवाद को लेकर पूर्व में बैठक की गई थी। पूरे मामले की विस्तार से रिपोर्ट बनाई जा रही है। शांति बहाली के बाद ही अग्रिम कार्रवाई होगी। – रविंद्र सिंह, डीएम

तनाव कई बार, तोड़फोड़ पहली बार, मंजर देख अफसर परेशान

फतेहपुर जनपद में कई बार दोनों समुदायों के बीच टकराव हुए, लेकिन कभी भी किसी धार्मिक स्थल पर तोड़फोड़ जैसी घटनाएं कभी नहीं हुई। यह पहली बार है कि इस तरह का मंजर देखने को मिला। आबू नगर रेड्डया ईदगाह के पीछे मकबरे में सोमवार को हिंदूवादी संगठन के लोगों ने तोड़फोड़ की। इससे पूरे जनपद में तनाव की स्थिति बनी है। इससे पहले साल 2016 में जहानाबाद में मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में जुलूस निकल रहा था। इसमें हिंदू संगठन के डॉ. प्रवीण तोगड़िया व तत्कालीन विधायक विक्रम सिंह भी मौजूद थे। जुलूस के दौरान एक समुदाय की ओर से ईंट, पत्थर चलाए गए थे। इसमें कई लोग घायल हुए थे। इस दौरान भी गैर जनपद की पुलिस व पीएसी को तैनात की गई थी। वहीं साल 2015 में सुल्तानपुर घोष थाना क्षेत्र में दुर्गा पूजा के दौरान पथराव की घटना हुई थी। मड़वा गांव में मूर्ति विसर्जन को लेकर रास्ते में विवाद हो गया था। एक समुदाय के लोगों ने पथराव किया था। इसमें दरोगा समेत कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

'पत्नी ने मुझे बेटी से पिटवाया...भाइयों, ऐसी लजदगी कौन जिएगा', डेढ़ मिनट का वीडियो बना व्यापारी ने दी जान

वाराणसी,संवाददाता। यूपी के चंदौली में कारोबारी ने खुदकुशी कर ली। जान देने से पहले कारोबारी ने डेढ़ मिनट के वीडियो में पत्नी पर उत्पीड़न का आरोप लगाया। यह भी आरोप लगाया कि घर में बाहरी लोगों को बुलाने का विरोध करने पर मुझे बेटी से ही पिटवा दिया। मेरे घर में कौन बाहरी लोग आ रहे हैं, यह पूछने का अधिकार मेरा है कि नहीं। यही बात पूछी तो पत्नी ने मेरी ही बेटी से मुझे पिटवाया। भाइयों, ऐसी जिंदगी कौन जिएगा...यह कहते हुए सोमवार को व्यापारी मनोज कुमार गोड़ (46) ने तमंचे से सिर में गोली मारकर आत्महत्या कर ली। गांव केशवपुर निवासी मनोज गोड़ ने आत्महत्या से पहले बनाए डेढ़ मिनट के वीडियो में पत्नी पर प्रताड़ित करने का आरोप लगाया। पुलिस ने मौके से 315 बोर का तमंचा बरामद किया। सदर कोतवाली क्षेत्र के गांव केशवपुर के मनोज कुमार गोड़ कैली रोड पर बिल्डिंग मैटेरियल की दुकान चलाते थे और प्रॉपर्टी डीलिंग का भी काम करते थे। परिवार में मनोज, उनकी पत्नी और उनकी दो बेटियां हैं। सोमवार सुबह करीब 7:30 बजे परिजनों ने उनके कमरे से गोली चलने की आवाज सुनी। दरवाजा खोलने पर मनोज खून से लथपथ कुर्सी पर बैठे मिले और पास में तमंचा पड़ा था। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

अवैध है बरामद असलहा

एएसपी अनंत चंद्रशेखर ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है। घटनास्थल से एक वीडियो भी मिला है, जो आत्महत्या से पहले का बताया जा रहा है। बरामद असलहा अवैध है। उसकी जांच की जा रही है कि वह मनोज के पास कैसे आया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और अन्य साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। अभी तहरीर नहीं मिली है। परिजन भी कुछ नहीं बता रहे हैं।

आत्महत्या से पहले बनाए गए वीडियो का अंश

हैलो दोस्तों, बाबू आज हमारी जिंदगी का लास्ट दिन है भइया, ये जो घूरन प्रसाद की लड़की है। भइया एकरा घरे के लइकी जहां–जहां गइनीं, उ कुल घर बरबार कर देनी भइया, आज इ यह स्थिति में ला देलस की हमार लइकी हमरे के मारे लगनी। भइया, अइसन जिंदगी के जिही भइया।

हे बाबू, हे सगाजन लोगों, हम आप लोगों को सूचित कर रहे हैं कि एकरे कुल खनदान के लइकी के कबहूं घरे मत लइहा जा, देख ल जा आप लोग के सामने हमार आज इ स्थिति है। इ सब कुल बाहरी–बाहरी अदमी बुलाके घरे में रखत हइसन, एही क हम आज विरोध कइनी ह कि हमरे घरे में के आवत ह, त हमके हमरे बेटी से मरवइलस ह। इस वीडियो में मनोज कुमार गोड़ की दाहिनी आंख की तरफ सिर से खून निकल रहा था।

भारत विश्व की फार्मेसी

पीएम मोदी ने सुझाया नवाचार का नुस्खा, नए शोध एवं विकास के साथ पेटेंट पर दिया विशेष जोर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फार्मा उद्योग को भी नवाचार का नुस्खा सुझाया

दिल्ली,एजेंसी। देश को आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फार्मा उद्योग को भी नवाचार का नुस्खा सुझाया। इसके साथ ही विश्व की फार्मेसी कहे जाने वाले भारत की क्षमताओं को उल्लेखित करने के लिए उन्होंने याद दिलाया कि किस तरह कोराना के संक्रमण काल में आपदा को अवसर बनाते हुए भारत ने मानव जाति का कल्याण किया। एक दशक में 16.9 से 30.4 बिलियन डॉलर तक पहुंचे फार्मा उद्योग को प्रधानमंत्री ने दिखाई संभावनाएं ।

देश को आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फार्मा उद्योग को भी ''''नवाचार का नुस्खा'''' सुझाया। ''''विश्व की फार्मेसी'''' कहे जाने वाले भारत की क्षमताओं को उल्लेखित करने के लिए उन्होंने याद दिलाया कि किस तरह कोराना के संक्रमण काल में आपदा को अवसर बनाते हुए भारत ने मानव जाति

का कल्याण किया।

फार्मा उद्योग को प्रधानमंत्री ने दिखाईं संभावनाएं

प्रधानमंत्री ने फार्मा उद्योग से जुड़े युवाओं को उत्साहित–प्रेरित करते हुए कहा– वैक्सीन में हम नए–नए रिकॉर्ड स्थापित करते हैं, लेकिन क्या समय की मांग नहीं है कि हम शोध एवं विकास में और ताकत लगाएं? हमारे अपने पेटेंट हों। दवा उत्पादन और निर्यात में वृद्धि के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बीच पीएम का यह प्रोत्साहन उस फार्मा उद्योग को ''''मोरल बूस्टर डोज'''' दे सकता है, जिसने बीते एक दशक में निर्यात के आंकड़े में 16.9 बिलियन डालर से 30. 4 बिलियन डॉलर तक की छलांग लगाई है।

भारत के फार्मा उद्योग को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने के पीछे प्रधानमंत्री मोदी ने मानव कल्याण को भी आधार बनाया। कहा कि हमारी अपनी बनाई हुई सस्ते से सस्ती और सबसे कारगर नई–नई दवाइयों का शोध हो और संकट में साइड इफेक्ट के बिना मानव जाति के कल्याण में काम आए।

वैक्सीन हमारी अपनी चाहिए तो देश ने करके दिखाया– पीएम

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा– मैं यह इसलिए कहने की हिम्मत करता हूं, क्योंकि मुझे देश के नौजवानों के सामर्थ्य पर भरोसा है। भरोसा सिर्फ इसलिए नहीं है कि वह मेरे देश के नौजवान है। कारण बताया कि कोविड के समय हम बहुत सारी चीजों पर निर्भर थे। जब मेरे देश के नौजवानों को कहा गया कि वैक्सीन हमारी अपनी चाहिए तो देश ने करके दिखाया। कोविन प्लेटफार्म हमारा अपना होना चाहिए तो देश ने करके दिखाया। करोड़ों–करोड़ों लोगों की जिंदगी बचाने का काम हमने किया है। वही जज्बा चाहिए, हमें जीवन के हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए अपना सब कुछ देना है, अपना जो बेस्ट है, हमें देखकर के रहना है। दरअसल, फार्मा उद्योग में आत्मनिर्भरता के लिए पीएम को यह आत्मविश्वास निराधार कतई नहीं है।

भारत को विश्व की फार्मेसी कहा जाता है

''''इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन'''' के अनुसार, भारत दुनिया में कम लागत वाले टीकों के सबसे बड़े आपूर्तिकर्ताओं में से एक है। कम कीमत और उच्च गुणवत्ता के कारण भारतीय दवाइयों को दुनिया भर में पसंद किया जाता है। इसी कारण से भारत को ''''विश्व की फार्मेसी'''' कहा जाता है। कारोबारी दृष्टिकोण से इसके आगे बढ़ने की संभावना इसलिए भी मजबूत है, क्योंकि भारत फार्मा क्षेत्र में पारंपरिक रूप से काफी मजबूत रहा है, जहां निर्माण की लागत कम है।

भारतीय फार्मा उद्योग का कुल बाजार 130 बिलियन डॉलर होगा

यह अमेरिका और यूरोप की तुलना में 30–35 प्रतिशत कम है। साथ ही कुशल अनुसंधान एवं विकास की लागत विकसित बाजारों की तुलना में लगभग 87 प्रतिशत कम है। विशेषज्ञों मानते हैं कि भारतीय फार्मा उद्योग का कुल बाजार आकार 2030 तक 130 बिलियन डॉलर और 2047 तक 450 बिलियन डालर तक पहुंचने की उम्मीद है।

पीएम मोदी ने जताया उर्वरकों में आत्मनिर्भरता का संकल्प, यूरिया उत्पादन में देश लगभग 87 प्रतिशत आत्मनिर्भर

लाल किले से लगातार 12वां संबोधन देकर तोड़ा इंदिरा गांधी का रिकॉर्ड, नेहरू के बाद दूसरे नेता
प्रधानमंत्री मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर दिया 103 मिनट का भाषण
किसी भी पीएम की ओर से दिया गया अब तक का सबसे लंबा संबोधन
जब–जब हुआ अश्वपरेशन सिदूर का जिक्र, तालियों से गूंज उठा लाल किला

नई दिल्ली,एजेंसी। लाल किले से पीएम मोदी के संदेश में कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की दिशा तय करने वाला रोडमैप भी दिखा। आत्मनिर्भर भारत के व्यापक विजन में उन्होंने उर्वरक उत्पादन को तरजीह देते हुए स्पष्ट किया कि देश अब पराश्रित रहने की स्थिति से बाहर निकलना चाहता है।

खाद्य सुरक्षा के लिए उर्वरक में भी आत्मनिर्भर होना जरूरी

रक्षा एवं ऊर्जा क्षेत्र में स्वावलंबन के प्रयासों की तरह खाद्य सुरक्षा के लिए उर्वरक में भी आत्मनिर्भर होना जरूरी है, ताकि विदेशी दबाव से किसानों को मुक्त किया जा सके। उन्होंने यह भी साफ किया कि खेती की लागत घटाना ही सिर्फ लक्ष्य नहीं है, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए सस्ती खाद भी उपलब्ध कराना है।

यूरिया उत्पादन में देश लगभग 87 प्रतिशत आत्मनिर्भर हो गया है

भारत में प्रत्येक साल लगभग 601 लाख टन से ज्यादा उर्वरक की खपत होती है, जबकि घरेलू उत्पादन करीब 500 लाख टन है। जाहिर है, लगभग सौ लाख टन से ज्यादा आयात करना पड़ता है। हालांकि यूरिया उत्पादन में देश लगभग 87 प्रतिशत आत्मनिर्भर हो गया है और एनपीके का 90 प्रतिशत उत्पादन घरेलू है, लेकिन डीएपी में यह हिस्सा केवल 40 प्रतिशत है। पोटाश (एमओपी) का पूरा उत्पादन विदेशों से आता है। फॉस्फेटिक उर्वरकों के कच्चे माल का 90 प्रतिशत और पोटाश का लगभग सौ प्रतिशत आयात मोरक्को, रूस, जार्डन और कनाडा जैसे देशों से होता है। हालांकि पिछले 11 वर्षों में बंद पड़े कई संयंत्रों को चालू किया गया है। सिंदरी, बरौनी, गोरखपुर और रामागुंडम में उत्पादन शुरू हो चुका है।

फसलों की उत्पादकता बढ़ाने की कोशिश

ओडिशा में तालचर परियोजना भी शुरू होने वाली है, जहां कोयले से यूरिया बनाने का पहला बड़ा प्रयास होगा। साथ ही नैनो–यूरिया और नीम–लेपित यूरिया का उत्पादन भी बढ़ाया जा रहा है, जिससे प्रति एकड़ खपत कम करने के साथ फसलों की उत्पादकता बढ़ाने की कोशिश हो रही है। हरित अमोनिया और नवीकरणीय ऊर्जा आधारित उर्वरक उत्पादन पर भी काम आगे बढ़ रहा है, हालांकि किसानों के बीच उर्वरकों के नैनो संस्करण की स्वीकार्यता बढ़ने में अभी समय लग सकता है। हालांकि उर्वरकों के मामले में आत्मनिर्भरता की राह आसान नहीं है।

सबसे बड़ी चुनौती कच्चे माल की कमी

सबसे बड़ी चुनौती कच्चे माल की कमी है, क्योंकि देश में फास्फोरिक एसिड, सल्फर और पोटाश के खनिज भंडार सीमित हैं। गैस और बिजली की ऊंची कीमतें उर्वरकों की उत्पादन लागत बढ़ाती हैं और तकनीकी व पर्यावरण संबंधी अड़चनें भी बनी हुई हैं। इसके बावजूद यदि देश में जरूरत भर डीएपी और एमओपी का उत्पादन होने लगेगा तो किसानों को समय पर पर्याप्त खाद मिलने के साथ वैश्विक बाजार की कीमतों के उतार–चढ़ाव से भी बचाया जा सकेगा।

खाद देने के लिए सरकार हर साल भारी भरकम सब्सिडी देती है

किसानों को कम कीमत पर खाद देने के लिए सरकार हर साल भारी भरकम सब्सिडी देती है। 2023–24 में उर्वरक सब्सिडी करीब 1.88 लाख करोड़ रुपये रही, जो 2024–25 में 1.91 लाख करोड़ रुपये हो गई। 2025–26 के बजटीय प्रविधान में 1.67 लाख करोड़ रुपये सब्सिडी के लिए रखा गया है, जो आगे बढ़ सकता है। सरकार इस बोझ को कम करने के लिए तकनीकी दक्षता, उत्पादन विस्तार, आयात पर निर्भरता में कमी और वितरण प्रणाली को दुरुस्त करने की दिशा में काम कर रही है।

उर्वरकों में आत्मनिर्भर भारत

प्रधानमंत्री के संदेश में साफ है कि यह केवल किसानों की भलाई का मुद्दा नहीं, बल्कि देश की सामरिक और आर्थिक सुरक्षा से भी जुड़ा है। उर्वरकों में आत्मनिर्भर भारत का मतलब होगाकृकिसानों की आय में स्थिरता, खेती में लागत का नियंत्रण और वैश्विक दबाव से मुक्ति।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव जी ने आज लखनऊ में 1857 की क्रांति में अहम भूमिका निभाने वाली महान वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी जी की जयंती के अवसर पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की ।

अवैध घुसपैठियों की समस्या से निजात के लिए मिशन, पीएम मोदी ने राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ा यह मुद्दा

नई दिल्ली,एजेंसी। देश के कई हिस्सों और खासकर सीमावर्ती इलाकों में अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ के कारण जनसांख्यिकी संतुलन के बिगड़ने को राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नया उच्चाधिकार प्राप्त जनसांख्यिकी मिशन शुरू करने की घोषणा की है।

यह मिशन भारतीय नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा

यह मिशन घुसपैठ के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए उत्पन्न होने वाले खतरे की पहचान, राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने और भारतीय नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा। इसके लिए मिशन कानूनी और प्रशासनिक रूप से जरूरी कदम उठाएगा और उनके क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग भी करेगा।

मिशन का गठन बड़ा राजनीतिक मुद्दा बन सकता है

प्रधानमंत्री ने साफ किया कि मिशन एक निश्चित अवधि में यह काम पूरा करेगा। वैसे बिहार, असम और पश्चिम बंगाल में आगामी विधानसभा चुनाव के पहले इस मिशन का गठन बड़ा राजनीतिक मुद्दा बन सकता है।

दरअसल असम, पश्चिम बंगाल और बिहार के सीमावर्ती जिलों में पिछले कई दशकों से जारी घुसपैठ के कारण जनसांख्यिकी पूरी तरह से बदल गया है। अवैध बांग्लादेशी घुसपैठिए की वजह से इन जिलों में मुसलमानों की आबादी तेजी से बढ़ी है।

अभी तक इसे कानून–व्यवस्था की समस्या के रूप में देखा जाता रहा है और संवैधानिक रूप से कानून व्यवस्था राज्य का विषय होने के कारण इससे निपटने में केंद्र सरकार की भूमिका सीमित हो जाती थी।

मृणाल ने तोड़ी चुप्पी

एंटरटेनमेंट डेस्क। पिछले काफी समय से अभिनेत्री मृणाल ठाकुर का नाम साउथ के सुपरस्टार धनुष के साथ जोड़ा जा रहा था। अब एक्ट्रेस ने फाइनली इन खबरों पर अपना रिएक्शन दे दिया है। बॉलीवुड गलियारों में पिछले कई दिनों से साउथ सुपरस्टार धनुष और मृणाल ठाकुर का नाम एक साथ जोड़ा जा रहा था। हाल ही में 'सन ऑफ सरदार 2' फिल्म की स्क्रीनिंग के दौरान कुछ ऐसी ही स्थिति बनी जब अभिनेत्री मृणाल ठाकुर और साउथ के सुपरस्टार धनुष को एक साथ एक दूसरे के करीब देखा गया। सोशल मीडिया पर इन दोनों के बीच रिश्ते को लेकर चर्चाएं तेज हो गई थीं, लेकिन अब मृणाल ने इन सभी अटकलों पर विराम लगा दिया है।

धनुष और मृणाल के डेटिंग रूमर्स

मामला तब शुरू हुआ जब धनुष, मृणाल ठाकुर की फिल्म 'सन ऑफ सरदार 2' की स्क्रीनिंग में पहुंचे। इससे पहले मृणाल को भी धनुष की फिल्म 'तेरे इश्क में' की रैप–अप पार्टी में देखा गया था। दोनों की बढ़ती मुलाकातों और सोशल मीडिया इंटरैक्शन ने इनके रिलेशनशिप की अटकलों को हवा दी। कुछ पोर्टल्स ने तो ये दावा तक कर दिया कि दोनों डेट कर रहे हैं, हालांकि अब इस पर खुद मृणाल ने प्रतिक्रिया दी है।

मृणाल ने कहा– 'बस अच्छे दोस्त हैं'

हाल ही में 'ओनली कॉलीवुड' को दिए एक इंटरव्यू में मृणाल ने साफ किया कि धनुष के साथ उनका रिश्ता सिर्फ दोस्ती का है। उन्होंने इन अफवाहों को मजाकिया बताते हुए कहा कि इन चर्चाओं को पढ़कर उन्हें हंसी आई। उनके मुताबिक, धनुष की मौजूदगी 'सन ऑफ सरदार 2' की स्क्रीनिंग में केवल अजय देवगन के न्योते पर हुई थी और इसे किसी रोमांटिक कोण से जोड़ना गलत है।

धनुष की मौजूदगी ने दी हवा

मृणाल और धनुष के एक ही इवेंट में शामिल होने से लेकर मृणाल द्वारा धनुष की बहनों को इंस्टाग्राम पर फॉलो करने तक, हर बात को अफवाहों का हिस्सा बना लिया गया। मगर मृणाल ने इन कयासों को सिर्फ दोस्ताना बताया और कहा कि इंडस्ट्री में सहयोग और आपसी सम्मान को लेकर ऐसी बातें होना दुर्भाग्यपूर्ण है।

धनुष की पर्सनल लाइफ भी बनी चर्चा का विषय

धनुष की निजी जिंदगी भी बीते कुछ वर्षों में सुर्खियों में रही है। सुपरस्टार रजनीकांत की बेटी ऐश्वर्या के साथ उनका विवाह 18 वर्षों तक चला, लेकिन 2022 में दोनों अलग हो गए और 2024 में उनका तलाक हो गया। उनके दो बेटे हैं दृ लिंगा और यात्रा।

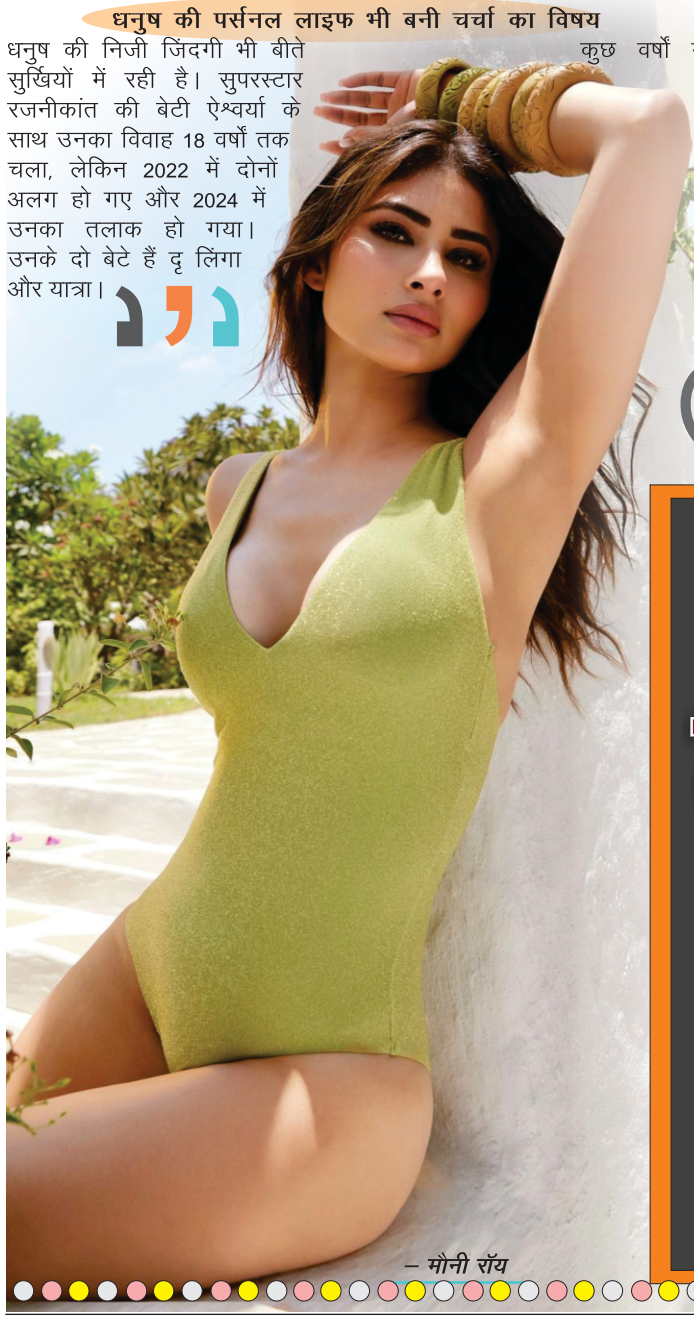

– मौनी रॉय

ईशा तलवार के बाद अब छलका टीवी एक्टर का दद

टीवी एक्टर अभिनव शुक्ला ने कास्टिंग डायरेक्टर शानू शर्मा को लेकर अब एक पोस्ट शेयर किया है जिसमें उन्होंने अपने अनुभव को साझा किया है।

जैस्मिन भसीन के साथ हुआ था

कास्टिंग काउच

मुम्बई.एजेंसी। बिग बॉस 14 में नजर आ चुकीं एक्ट्रेस जैस्मिन भसीन ने हाल ही में कास्टिंग काउच से जुड़ा अनुभव शेयर किया। उन्होंने बताया कि एक निर्देशक ने ऑडिशन के बहाने उन्हें गलत तरीके से छूने की कोशिश की। हालांकि, जैस्मिन ने स्थिति को समय रहते समझ लिया और वहां से बाहर निकल गईं। द हिमांशु मेहता शो में बातचीत के दौरान जैस्मिन ने कहा, मैं बॉम्बे ऑडिशन देने आई थी और जुहू के एक होटल में एक मीटिंग थी। जहां कई लड़कियां और एक्ट्रेसेज लॉबी में इंतजार कर रही थीं। साथ में कई कोऑर्डिनेटर भी मौजूद थे, तो वहां सब मीटिंग के लिए आए हुए थे। जब मैं उस मीटिंग रूम में गई, तो वहां एक आदमी शराब पीते हुए ऑडिशन की बातें कर रहा था, जिसे देखकर मैं डर गई। यहां तक कि कोऑर्डिनेटर भी कमरे से बाहर चला गया। शुरुआत में मैं बहुत घबरा गई थी। फिर उस आदमी ने मुझसे कहा कि तुम्हें यह सीन परफॉर्म करना है। मैंने जवाब दिया था सर मैं सीन तैयार करके कल आऊंगी। लेकिन उसने जोर देकर कहा नहीं, अभी करना होगा। तो मैंने डर के मारे वो सीन कर दिया।

कब शुरू होगा 'इत्ती सी खुशी',तय हो गई तारीख

मुंबई.एजेंसी। सोनी सब अपने नए शो 'इत्ती सी खुशी' को लॉन्च करने के लिए पूरी तरह तैयार है। मुंबई की पृष्ठभूमि पर आधारित यह शो 21 वर्षीय अन्विता की कहानी है, जो छह भाई–बहनों में सबसे बड़ी है और अपने टूटते परिवार की अनपेक्षित आधारशिला बन जाती है। शराब की लत से जूझते पिता और परिवार छोड़ चुकी मां के बीच अन्विता अपने परिवार को संभालने वाली डोर बन जाती है। वह अपनी पढ़ाई और सपनों की बलि देकर उनके बेहतर भविष्य के लिए संघर्ष करती है। आगे की कहानी रोजमर्रा के संघर्ष, मौन त्याग और प्रेम व धैर्य की जीत को हास्य और कोमल भावनाओं के साथ प्रस्तुत करती है। वरुण बडोला छह साल बाद टीवी पर वापसी कर रहे हैं और शो में विकृत पिता सुहास का किरदार निभा रहे हैं। सुम्बुल तौकीर उनकी बेटी अन्विता

और रजत वर्मा उनके प्रेमी विराट की भूमिका में नजर आएंगे। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक राजेश मापुस्कर भी शो के क्रिएटिव पक्ष से जुड़े हैं। रोज़ ऑडियो विजुअल्स द्वारा निर्मित इत्ती सी खुशी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित सीरीज़ 'शेमलेस' का भारतीय रूपांतरण है, जिसे मूल रूप से कंपनी पिक्चर्स और यूके लेखक पॉल एबट ने विकसित किया था, और ऑल3मीडिया इंटरनेशनल के सहयोग से तैयार किया गया था। यह शो यूके के चैनल 4 पर एक कल्ट फेवरेट बन गया था और बाफ्टा टीवी अवॉर्ड्स में बेस्ट ड्रामा सीरीज़ सहित कई पुरस्कार जीते थे। इसके अमेरिकी संस्करण ने भी कई प्राइमटाइम एमी नामांकन प्राप्त किए और चार पुरस्कार जीते। ब्रिटेन और अमेरिका में बने दोनों ही रूपांतरणों में इसके कलाकार बेजोड़ और प्रतिभाशाली रहे हैं।

जल्द आएगा सलाकार का सीजन 2

हालांकि, सलाकार की पूरी कहानी अभी 5 एपिसोड में खत्म नहीं हुई है। इस सीरीज का दूसरा सीजन आना तय है, क्योंकि एक खुफिया मिशन पर पाकिस्तान गई भारतीय जासूस की घर वापसी होना बाकी है। इसकी रोमांचत कहानी आपको सलाकार सीजन 2 में देखने को मिलेगी, जिसे मेकर्स जल्द ही रिलीज कर सकते हैं।

ओटीटी पर इस वेब सीरीज का कब्जा

ओटीटी प्लेटफार्म पर हाल ही में एक लेटेस्ट वेब सीरीज को रिलीज किया गया है जिसने अपनी शानदार कहानी के दम पर हर किसी का दिल जीत लिया है। आलम ये है कि ओटीटी पर 5 एपिसोड वाली इस सीरीज का कब्जा बना हुआ है। आइए जानते हैं कि इस लेख में किसकी बात की जा रही है।

एंटरटेनमेंट डेस्क। ओटीटी एक ऐसा माध्यम है, जिस पर मनोरंजन का भरमार देखने को मिलता है। आए दिन किसी न किसी ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कोई न कोई नई फिल्म या वेब सीरीज को ऑनलाइन स्ट्रीम किया जाता है। आज इस लेख में हम आपको ऐसी ही एक लेटेस्ट वेब सीरीज के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसने आते ही ओटीटी पर कब्जा जमा लिया है। 5 एपिसोड वाली इस रोमांचक सीरीज के बारे में हर तरफ चर्चा हो रही है और देखते ही देखते ये मोस्ट वॉच भी बन रही है। आइए जानते हैं कि यहां कौन सी सीरीज के बारे में जिक्र किया जा रहा है।

हाल ही में आनलाइन किया गया स्ट्रीम 5 एपिसोड में सस्पेंस और रोमांच का खेल

ओटीटी पर 5 एपिसोड वाली सीरीज का कब्जा

सिनेमा जगत का स्तर ओटीटी के जरिए काफी अधिक बढ़ा है। जो बेहतरीन कहानियां सिनेमाघरों तक नहीं पहुंच पाती थीं, आज वही वेब सीरीज और फिल्मों के माध्यम से ओटीटी पर कमाल कर रही हैं। कुछ ऐसी ही स्टोरी एक लेटेस्ट वेब सीरीज की है, जिसे हाल ही में ऑनलाइन रिलीज किया गया है। इस सीरीज के 5 एपिसोड में भारत के एक खुफिया मिशन की कहानी के दिखाया गया है, जो दुश्मन देश पाकिस्तान के नापाक इरादों का खात्मा करना है। सीरीज की कहानी टाइम ट्रैवल करती दिखती है, जिसमें एक पृष्ठभूमि 1978 और दूसरी मौजूदा समय 2025 की दिखाई जाती है। इस स्पाई थ्रिलर की पूरी कहानी भारत के सुरक्षा सलाहकार के एक सीक्रेट मिशन के इर्द–गिर्द घूमती है, जिसे उन्होंने पाकिस्तान में अंजाम दिया था। अब तो आप समझ ही गए होंगे कि यहां वेब सीरीज सलाकार के बारे में चर्चा की जा रही है।

वनडे इतिहास में किस टीम की ओर से लगे सबसे ज्यादा शतक? इन तीन देशों से आगे हैं सचिन-विराट और रोहित

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत वनडे में शतकों में मामले में शीर्ष पर तो है ही, लेकिन वह दूसरे नंबर पर मौजूद ऑस्ट्रेलिया से कहीं आगे है। ऑस्ट्रेलिया की ओर से अब तक वनडे में 252 शतक लगे हैं। वनडे क्रिकेट के इतिहास में भारतीय बल्लेबाजों का दबदबा साफ झलकता है। आंकड़े बताते हैं कि टीम इंडिया ने इस फॉर्मेट में सबसे ज्यादा शतक लगाकर विश्व क्रिकेट पर अपनी बादशाहत कायम की है। भारत की ओर से वनडे में अब तक कुल 323 शतक लगे हैं, जो अन्य किसी भी टीम से ज्यादा हैं। यही वजह है कि सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे दिग्गज बल्लेबाजों के नाम आज भी दुनिया भर में चर्चा का विषय रहते हैं। इतना ही नहीं, इन तीनों मिलकर वनडे में जितने शतक लगाए, वह तीन देशों के कुल शतक से ज्यादा हैं।

ऑस्ट्रेलिया से कहीं आगे भारत

भारत वनडे में शतकों में मामले में शीर्ष पर तो है ही, लेकिन वह दूसरे नंबर पर मौजूद ऑस्ट्रेलिया से कहीं आगे है। ऑस्ट्रेलिया की ओर से अब तक वनडे में 252 शतक लगे हैं। कंगारू टीम अपनी आक्रामक बल्लेबाजी के लिए जानी जाती है, लेकिन भारत से वह काफी पीछे है। पाकिस्तान का नाम तीसरे स्थान पर आता है, जिसकी ओर से 229 शतक लगे हैं। इन तीन देशों के बाद दक्षिण अफ्रीका (213 शतक), वेस्टइंडीज (211 शतक) और इंग्लैंड (204 शतक) का नाम आता है। ये टीमें भी अपने दौर में धाकड़ बल्लेबाजी के लिए मशहूर रही हैं।

श्रीलंका की ओर से वनडे में अब तक 200 शतक लगे हैं। वहीं न्यूजीलैंड (166 शतक), जिम्बाब्वे (79 शतक), बांग्लादेश (70 शतक) और आयरलैंड (53 शतक) जैसी टीमें भी इस लिस्ट में हैं। उभरती टीमों में स्कॉटलैंड (41 शतक) और अफगानिस्तान (37 शतक) का नाम शामिल है, जिन्होंने हाल के वर्षों में तेजी से प्रगति की है।

भारत को कहा जाता है बैटिंग पावरहाउस

भारत की बढ़त सिर्फ टीम रिकॉर्ड तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत बल्लेबाजों के स्तर पर भी भारतीय खिलाड़ियों का दबदबा रहा है। विराट कोहली (51 शतक), सचिन तेंदुलकर (49 शतक) और रोहित शर्मा (32 शतक) वनडे प्रारूप में सबसे ज्यादा शतक लगाने के मामले में शीर्ष तीन पर काबिज हैं। यही वजह है कि भारत को बैटिंग पावरहाउस कहा जाता है। इन तीनों ने बल्लेबाजी का नया अध्याय लिखा है।

भारत के तीन दिग्गज बल्लेबाज

इन तीनों के रिकॉर्ड इतने बड़े हैं कि कई टीमों का कुल शतक मिलाकर भी इनसे कम बैठता है। विराट, सचिन और रोहित के शतकों को मिलाकर कुल 132 शतक होते हैं, जो कि स्कॉटलैंड, आयरलैंड और अफगानिस्तान के कुल शतकों (131) से ज्यादा है। सचिन, विराट और रोहित ने अपनी बल्लेबाजी से न सिर्फ मैच जिताए हैं, बल्कि करोड़ों फैंस को गर्व करने का मौका भी दिया है।

'रोहित-विराट का भविष्य अनिश्चित

स्पोर्ट्स डेस्क। भारतीय टीम अक्तूबर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेगी। इससे पहले टीम इंडिया को एशिया कप खेलना है। विश्व कप में अभी दो साल हैं। ऐसे में यह सवाल बना हुआ है कि क्या रोहित शर्मा और विराट कोहली तब तक खेल पाएंगे। उस समय तक रोहित 40 और कोहली 39 वर्ष के हो जाएंगे। टीम में बने रहने के लिए उन्हें भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) और गौतम गंभीर के नेतृत्व वाले टीम प्रबंधन से समर्थन हासिल करना होगा।भारतीय टीम के दिग्गज बल्लेबाज रोहित शर्मा और विराट कोहली ने इस साल मई में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेकर अपने शानदार करियर के अंतिम चरण में प्रवेश कर लिया। टी20 प्रारूप को दोनों पहले ही अलविदा कह चुके हैं। अब उनके वनडे में भविष्य को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। हालांकि, रोहित और कोहली के बिना भी भारतीय टेस्ट टीम ने बल्लेबाजी मोर्चे पर किसी बड़ी परेशानी का सामना नहीं किया। हाल ही में समाप्त हुई तेंदुलकर-एंडरसन ट्रॉफी (भारत बनाम इंग्लैंड टेस्ट सीरीज) में टीम के नए कप्तान शुभमन गिल, केएल राहुल, रवींद्र जडेजा और ऋषभ पंत ने शानदार प्रदर्शन किया और पांच मैचों की टेस्ट सीरीज 2-2 की बराबरी पर समाप्त की।

वनडे विश्व कप 2027 तक खेलेंगे रोहित और कोहली?

भारतीय टीम अक्तूबर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेगी। इससे पहले टीम इंडिया को एशिया कप खेलना है। विश्व कप में अभी दो साल हैं। ऐसे में यह सवाल बना हुआ है कि क्या रोहित शर्मा और विराट कोहली तब तक खेल पाएंगे। उस समय तक रोहित 40 और कोहली 39 वर्ष के हो जाएंगे। टीम में बने रहने के लिए उन्हें भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) और गौतम गंभीर के नेतृत्व वाले टीम प्रबंधन से समर्थन हासिल करना होगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक, रोहित से जल्द ही कप्तानी छोड़ने के लिए कहा जा सकता है ताकि शुभमन गिल को 2027 विश्व कप की तैयारी में 50 ओवरों के प्रारूप का अगला कप्तान बनाया जा सके।

दोनों के पास ऊर्जा और अनुभव का भंडार- रैना

पूर्व भारतीय क्रिकेटर सुरेश रैना का मानना है कि सफेद गेंद प्रारूप के इन दोनों दिग्गजों के पास अभी भी काफी ऊर्जा और अनुभव बचा है। उनका कहना है कि वनडे प्रारूप में रोहित शर्मा और विराट कोहली की विशेषज्ञता, शुभमन गिल और पूरी टीम इंडिया के लिए विश्व कप से पहले बेहद अहम साबित होगी।

शुभमन गिल ने जिस तरह का नेतृत्व किया वह अविश्वसनीय था : युवराज

नई दिल्ली भारत के पूर्व वल्लेबाज युवराज सिंह को लगता है कि हाल के इंग्लैंड दौरे पर शुभमन गिल का प्रदर्शन अविश्वसनीय था क्योंकि पांच टेस्ट मैचों की सीरीज से पहले विदेशी हालात में उनकी वल्लेबाजी पर सवाल उठाए जा रहे थे। हाल में एंडरसन-तेंदुलकर टेस्ट सीरीज के दौरान गिल ने चार शतक बनाए और 754 रन के साथ शीर्ष स्कोरर रहे। इस उपलब्धि ने उन्हें सेना (दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया) देश में टेस्ट सीरीज में 700 से अधिक रन बनाने वाला पहला एशियाई वल्लेबाज बना दिया।

> ■ इंग्लैंड में जाकर खेलना और खुद को साबित करना आसान नहीं है, मुझे भारतीय टीम पर बहुत गर्व है

भारत के तीन दिग्गज विराट कोहली, रोहित शर्मा और रविचंद्रन अश्विन के लंबे प्रारूप के क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद 25 वर्षीय गिल ने इस मुश्किल दौरे पर युवा टेस्ट टीम का नेतृत्व किया। युवराज ने महिला क्रिकेट विश्व कप टूर्नामेंट के 50 दिन की उलटी गिनती पर आयोजित '50 डेज टू गो' कार्यक्रम के इतर आईसीसी डिजिटल से कहा, 'उनके विदेशी रिकॉर्ड पर कई सवालिया निशान थे। वह (गिल) कप्तान बने और चार टेस्ट शतक जड़े। यह अविश्वसनीय है कि जब आपको जिम्मेदारी दी जाती है तो आप उसे कैसे लेते हैं।'

उन्होंने कहा, 'इसलिए मुझे उन पर (भारतीय टीम पर) बहुत गर्व है। मुझे निश्चित रूप से लगता है कि यह हमारी जीत है, हालांकि यह सीरीज ड्रा रही क्योंकि यह युवा टीम है। और इंग्लैंड में जाकर खेलना और खुद को साबित करना आसान नहीं है।' विकेटकीपर-वल्लेबाज ऋषभ पंत, आकाशदीप और अर्शदीप सिंह के चोटिल होने और उनके मुख्य तेज गेंदवाज जसप्रीत बुमराह के कार्यभार के कारण केवल तीन मैच खेलने के बावजूद सीरीज में भारत का दृढ़ संकल्प दिखा और उन्होंने ओवल में पांचवें टेस्ट में छह रन से रोमांचक जीत हासिल कर सीरीज बराबर कर दी।

गिल के 'मेंटोर' (मार्गदर्शक) रहे युवराज ने कहा कि कोहली और रोहित जैसे खिलाड़ियों के बिना भी भारतीय टीम ने चुनौती का डटकर सामना किया। उन्होंने कहा, 'यह वाकई शानदार है क्योंकि मुझे लगता है कि जब आपके पास इंग्लैंड जाने वाली युवा टीम होती है तो बहुत दबाव होता है। आप विराट कोहली, रोहित शर्मा जैसे खिलाड़ियों की जगह ले रहे होते हैं, यह आसान नहीं होता। खिलाड़ियों ने इसका डटकर सामना किया।'

उन्होंने ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा और वाशिंगटन सुंदर के प्रयासों की भी सराहना की, जिनकी लंबी साझेदारी की बदौलत भारत ने मैनचेस्टर में चौथा टेस्ट ड्रा कराया। युवराज ने कहा, 'टूर्नामेंट में वह पल शानदार था जब भारत ने टेस्ट सीरीज ड्रा कराई। मैंने बहुत लंबे समय से वाशिंगटन और जडेजा को शतक बनाते और टेस्ट मैच ड्रा कराते नहीं देखा।' उन्होंने कहा, 'यह बहुत कुछ कहता है। निश्चित रूप से जडेजा लंबे समय से टीम में हैं। लेकिन मुझे लगता है कि टीम में युवा खिलाड़ी वाशिंगटन सुंदर ने जो किया वह अविश्वसनीय था।'

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः- 273003
UPHIN/2023/90814
बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com
नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

दुनिया के 5 सर्वश्रेष्ठ विकेटकीपर, किए सबसे ज्यादा शिकार

स्पोर्ट्स डेस्क। गेंद कहां डालनी है, इसकी सलाह गेंदबाजों को देना, एलबीडब्ल्यू अपील पर रिव्यू लेना है या नहीं, बल्लेबाज के फुट वर्क...जैसी कई चीजों पर विकेटकीपर की नजर होती है और वह विपक्षी बल्लेबाज के खिलाफ सही रणनीति बनाने में मदद कर सकता है। क्रिकेट की दुनिया में बल्लेबाज और गेंदबाज जितने अहम होते हैं, उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी फील्डर्स की होती है। फील्डर्स में भी विकेटकीपर के कंधों पर काफी जिम्मेदारी होती है।

विकेट के पीछे खड़े होकर न सिर्फ गेंद को पकड़ना बल्कि स्टंपिंग और रन आउट करके मैच का रुख बदलना आसान काम नहीं होता। इतिहास गवाह है कि कई दिग्गज विकेटकीपर अपने कमाल के रिफ्लेक्स और तेज दिमाग से विपक्षी टीम की योजनाओं को ध्वस्त करते रहे हैं। क्रिकट एक्सपर्ट्स का ऐसा मानना है कि विकेट के पीछे से विकेटकीपर को मैदान का सबसे अच्छा व्यू मिलता है। गेंद कहां डालनी है, इसकी सलाह गेंदबाजों को देना, एलबीडब्ल्यू अपील पर रिव्यू लेना है या नहीं, बल्लेबाज के फुट वर्क...जैसी कई चीजों पर विकेटकीपर की नजर होती है और वह विपक्षी बल्लेबाज के खिलाफ सही रणनीति बनाने में मदद कर सकता है। हम आपको इस खबर में दुनिया के पांच सर्वश्रेष्ठ विकेटकीपर बल्लेबाजों के बारे में बता रहे हैं...

धोनी विकेट के पीछे से पलटते थे गेम

विकेटकीपिंग के दिग्गजों में एमएस धोनी का नाम सबसे अलग और सबसे चमकदार है। 2004 में डेब्यू करने के बाद धोनी ने 2019 वर्ल्ड कप तक अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में तीनों प्रारूपों को मिलाकर विकेट के पीछे 829 शिकार किए। इनमें 634 कैच और 195 स्टंपिंग शामिल हैं। धोनी की गिनती ऐसे विकेटकीपर्स में होती है जो सिर्फ गेंद पकड़ने तक सीमित नहीं थे, बल्कि कई बार विकेट के पीछे से गेम का पासा पलट देते थे। यही वजह है कि उन्हें 'वॉल बिहाइंड द स्टंप्स' (विकेट के पीछे दीवार) कहा गया।

बाउचर शीर्ष पर, गिलक्रिस्ट दूसरे नंबर पर

हालांकि, धोनी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में विकेट के पीछे सबसे ज्यादा शिकार करने वालों में तीसरे स्थान पर हैं। इस सूची में दक्षिण अफ्रीका के पूर्व विकेटकीपर मार्क बाउचर सबसे ऊपर हैं। उन्होंने 467 मैचों में 952 कैच और 46 स्टंपिंग मिलाकर कुल 998 शिकार किए। ऑस्ट्रेलिया के महान विकेटकीपर बल्लेबबाज एडम गिलक्रिस्ट भी विकेटकीपिंग में एक बड़ा नाम रहे हैं। उन्होंने 396 मैचों में 813 कैच और 92 स्टंपिंग के साथ 905 शिकार किए। वह लिस्ट में दूसरे नंबर पर हैं।

संगकारा भी लिस्ट में शामिल

वहीं, श्रीलंका के पूर्व क्रिकेटर कुमार संगकारा अपनी बल्लेबाजी के साथ-साथ विकेटकीपिंग में भी शानदार रहे। उन्होंने 594 मैचों में विकेट के पीछे से 678 शिकार किए, जिनमें 539 कैच और 139 स्टंपिंग शामिल हैं। वहीं ऑस्ट्रेलिया के इयान हीली ने 287 मैचों में 628 शिकार किए। इनमें 560 कैच और 298 स्टंपिंग शामिल हैं।

स्टंपिंग में धोनी सबसे बेहतर

हालांकि, धोनी इन सबसे स्टंपिंग के मामले में बेहतर रहे हैं। धोनी ने तीनों प्रारूपों को मिलाकर 195 स्टंपिंग कीं, जो कि सबसे ज्यादा हैं। बिजली की तेजी से स्टंपिंग करना, उनके बाएं हाथ का खेल था। ये पांचों खिलाड़ी अपने-अपने समय के बेस्ट विकेटकीपर रहे हैं। आज भी क्रिकेट फैंस इनकी विकेटकीपिंग स्किल्स को याद करते हैं और मानते हैं कि विकेट के पीछे इनकी मौजूदगी से गेंदबाजों को बड़ी राहत मिलती थी।